बिहार सामान्य ज्ञान सम्पूर्ण अध्यायवार

अध्ययन सामग्री एवं सॉल्व्ड पेपर्स

प्रधान संपादक
ए. के. महाजन

लेखन सहयोग
परीक्षा विशेषज्ञ समिति

कम्प्यूटर ग्राफिक्स
बालकृष्ण, चरन सिंह

सम्पादकीय कार्यालय
12, चर्च लेन, प्रयागराज-211002

9415650134
Email : yctap12@gmail.com
website : www.yctbooks.com/www.yctfastbook.com/www.yctbooksprime.com

© All Rights Reserved with Publisher

प्रकाशन घोषणा

प्रधान सम्पादक एवं प्रकाशक आनन्द कुमार महाजन ने E:Book by APP Youth Prime BOOKS, से मुद्रित करवाकर, वाई.सी.टी. पब्लिकेशन्स प्रा. लि., 12, चर्च लेन, प्रयागराज के लिए प्रकाशित किया।

इस पुस्तक को प्रकाशित करने में सम्पादक एवं प्रकाशक द्वारा पूर्ण सावधानी बरती गई है फिर भी किसी त्रुटि के लिए आपका सुझाव एवं सहयोग सादर अपेक्षित है।

किसी भी विवाद की स्थिति में न्यायिक क्षेत्र प्रयागराज होगा।

विषय-सूची

■ बिहार : संक्षिप्त अवलोकन 3-16
■ बिहार : इतिहास.. 17-67
■ बिहार : भौगोलिक संरचना एवं स्थिति 68-85
■ बिहार : कृषि व पशुपालन.. 86-99
■ बिहार : वन एवं वन्यजीव 100-107
■ बिहार : खनिज एवं ऊर्जा संसाधन 108-119
■ बिहार : औद्योगिकीकरण एवं नियोजन 120-128
■ बिहार : प्रमुख योजनाएं 129-137
■ बिहार : परिवहन एवं संचार.. 138-144
■ बिहार : जनगणना 2011.. 145-159
■ बिहार : जाति आधारित जनगणना 2022-23.. 160-165
■ बिहार : राजव्यवस्था एवं प्रशासन.. 166-178
■ बिहार : कला एवं संस्कृति 179-191
■ बिहार : पर्यटन 192-206
■ बिहार : शिक्षा, स्वास्थ्य एवं खेलकूद.. 207-218
■ बिहार : पुरस्कार एवं सम्मान, साहित्य एवं पत्रकारिता.. 219-221
■ बिहार : प्रसिद्ध व्यक्तित्व.. 222-225
■ बिहार : समसामयिकी.. 226-231
■ बिहार : आर्थिक सवेक्षण 2023-24.. 232-242
■ बिहार : बजट 2024-25 243-254
■ भारत रत्न जननायक कर्पूरी ठाकुर 255
■ नालंदा विश्वविद्यालय 256

बिहार : संक्षिप्त अवलोकन

सीमावर्ती राज्य एवं देश

स्थापना दिवस – 22 मार्च
22 मार्च, 1912 को बिहार प्रांत (ओडिशा सहित) के गठन की अधिसूचना जारी की गई (इससे पहले बिहार अविभाजित बंगाल का भाग था) इसीलिए 22 मार्च को बिहार राज्य का स्थापना दिवस मनाया जाता है।

नामकरण – बिहार नाम का प्रादुर्भाव बौद्ध संन्यासियों के ठहरने के स्थान 'विहार' शब्द से हुआ, जिसे विहार के स्थान पर इसके अपभ्रंश रूप बिहार से संबोधित किया जाता है।

प्रथम विभाजन - वर्ष 1936 में (उड़ीसा को अलग प्रान्त का दर्जा दिया गया)

द्वितीय विभाजन - 15 नवम्बर, 2000 (झारखण्ड को अलग राज्य का दर्जा दिया गया)

राजधानी – पटना

क्षेत्रफल की दृष्टि से भारत में स्थान – 12वाँ (जम्मू एवं कश्मीर राज्य पुनर्गठन के पश्चात्)

जनसंख्या की दृष्टि से भारत में स्थान – तीसरा (जनगणना 2011 के अनुसार)

भौगोलिक

अवस्थिति – $24^0$20'10" से $27^0$31'15" उत्तरी अक्षांश से लेकर $83^0$19'50" से $88^0$17'40" पूर्वी देशांतर तक।

क्षेत्रफल – 94,163 वर्ग किमी. (36357 वर्ग मील)

● ग्रामीण क्षेत्रफल – 92,257.51 वर्ग किमी.

● शहरी क्षेत्रफल – 1905.49 वर्ग किमी.

भारत के क्षेत्रफल में भागीदारी - 2.86%

औसत वार्षिक वर्षा - 125 सेमी.

समुद्र तल से औसत ऊँचाई - 173 फीट (53 मीटर)

वर्षा दिनों की औसत संख्या - 52.5 दिन (प्रति वर्ष)

उत्तर से दक्षिण (लम्बाई) – 345 किमी.

पूर्व से पश्चिम (चौड़ाई)	–	483 किमी.
सीमावर्ती राज्य	–	पूर्व में पश्चिम बंगाल, पश्चिम में उत्तर प्रदेश तथा दक्षिण में नवगठित राज्य झारखण्ड (उत्तर में नेपाल देश है)
क्षेत्रफल के अनुसार सबसे बड़ा जिला	-	प. चंपारण
क्षेत्रफल के अनुसार सबसे छोटा जिला	-	शिवहर
जनसंख्या (2011)	-	104099452
जनसंख्या घनत्व	-	1106 प्रति वर्ग किमी.
सर्वाधिक जन घनत्व वाला जिला	-	शिवहर (1880 प्रति वर्ग किमी.)
न्यूनतम घनत्व वाला जिला	-	कैमूर (488 प्रति वर्ग किमी.)
सर्वाधिक जनसंख्या वाला जिला	-	पटना (5838465)
न्यूनतम जनसंख्या वाला जिला	-	शेखपुरा (636342)
लिंगानुपात	-	918
सर्वाधिक लिंगानुपात	-	गोपालगंज (1021)
न्यूनतम लिंगानुपात	-	मुंगेर (876)
साक्षरता	-	61.80 (पुरुष- 71.20, महिला- 51.50)
सर्वाधिक साक्षरता दर	-	रोहतास (73.37)
न्यूनतम साक्षरता दर	-	पूर्णिया (51.08)
सबसे पूर्वी जिला	–	किशनगंज
सबसे पश्चिमी जिला	–	कैमूर
सबसे उत्तरी जिला	–	पश्चिम चम्पारण
सबसे दक्षिणी जिला	–	गया

बिहार विशेष

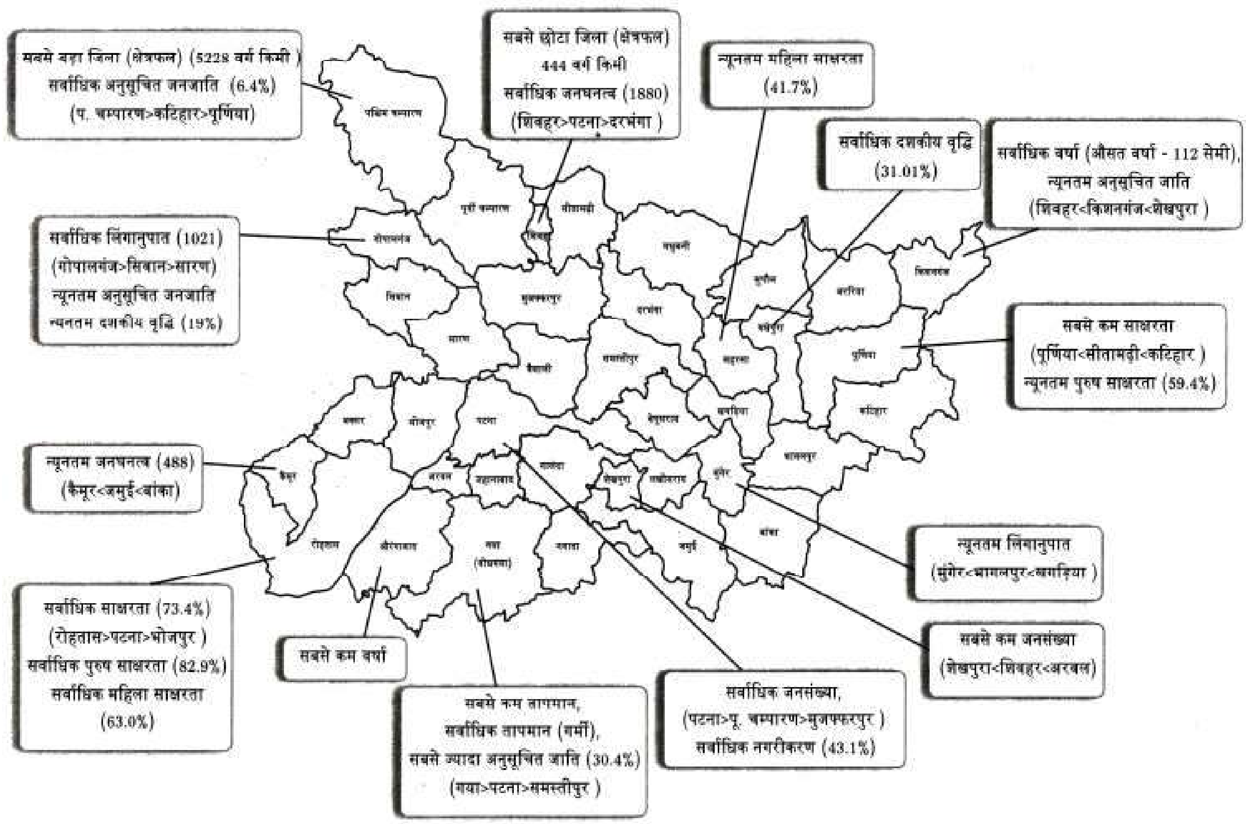

राजनीतिक

शासन पद्धति	–	संसदीय शासन प्रणाली, द्विसदनीय (विधान सभा, विधान परिषद)
कुल लोकसभा सीटें	–	40
लोकसभा में सुरक्षित सीटें	–	6
राज्य सभा सीटें	–	16
विधानसभा सदस्यों की संख्या	–	243 (15 नवम्बर 2000 के बाद)
विधानसभा में सुरक्षित सीटें	–	40 (SC-38, ST-2)
विधान परिषद में सदस्यों की कुल संख्या	–	75

वर्तमान : पद नियुक्ति

राज्यपाल	राजेन्द्र विश्वनाथ आर्लेकर
मुख्यमंत्री	नीतीश कुमार
उप-मुख्यमंत्री	सम्राट चौधरी तथा विजय कुमार सिंहा
विधानसभा अध्यक्ष	नन्द किशोर यादव
उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश	न्यायमूर्ति के. विनोद चंद्रन
राज्य महिला आयोग की अध्यक्ष	अश्वमेध देवी
राज्य मानवाधिकार आयोग के अध्यक्ष	अनंत मनोहर बदर
राज्य मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी	एच. आर. श्रीनिवास
राज्य मुख्य सूचना आयुक्त	त्रिपुरारी शरण

प्रशासनिक

प्रमंडल	9 (मगध, पटना, मुंगेर, दरभंगा, पूर्णिया, तिरहुत, सारण, भागलपुर, कोसी)
जिलें	38 (38वाँ जिला अरवल है, इसे 2001 में जहानाबाद जिले से काटकर गठित किया गया)
अनुमंडल	101
महानगरों की संख्या	01 (पटना)
प्रखण्ड (अंचल)	534
पंचायत	8463
राजस्व ग्राम	45103
कुल नगर	199
पुलिस स्टेशन	853 (सिविल पुलिस स्टेशन- 813, रेलवे पुलिस स्टेशन- 40)
रेलवे पुलिस स्टेशन	40
सिविल पुलिस जिले	40
रेलवे पुलिस जिले	4
पंचायत समिति	534
जिला परिषद	38
नगर निगम	19
नगर परिषद	89
नगर पंचायत	155

बिहार का गठन

- वर्ष 1894 में 'बिहार टाइम्स' नामक पत्रिका का प्रकाशन आरम्भ हुआ जिसमें बिहार को पृथक प्रांत बनाने की मांग रखी गयी। इस पत्रिका के सम्पादक महेश नारायण और उनके प्रमुख सहयोगी सच्चिदानंद सिन्हा थे।
- बिहार को बंगाल से पृथक प्रांत बनाने की घोषणा जार्ज पंचम द्वारा दिल्ली दरबार में 12 दिसंबर 1911 को की गई ।
- भारत सरकार अधिनियम 1912 के माध्यम से तत्कालीन वायसराय लार्ड हार्डिंग II ने बिहार एवं उड़ीसा प्रांत के निर्माण के संबंध में अंतिम औपचारिक घोषणा की। पहले बिहार अविभाजित बंगाल का भाग था। 22 मार्च 1912 को बिहार तथा उड़ीसा संयुक्त प्रांत के गठन की घोषणा विधिवत जारी की गई।
- 1 अप्रैल, 1912 को बिहार एवं उड़ीसा संयुक्त रूप से एक प्रांत के रूप में बंगाल प्रेसीडेंसी से अलग होकर अस्तित्व में आए।
- 28 मार्च, 1936 को बिहार के लिए पृथक विधान परिषद के गठन का आदेश पारित किया गया।
- 1 अप्रैल, 1936 को बिहार और उड़ीसा (वर्तमान ओडिशा) अलग अलग राज्य के रूप में अस्तित्व में आए।
- 15 नवंबर 2000 को बिहार के दक्षिणी भाग के 18 जिलों को अलग करके नए राज्य झारखण्ड का गठन किया गया। जिसमें बिहार का 79,714 वर्ग किमी. (46%) भू भाग आता था।
- विभाजन से पूर्व बिहार में 13 प्रमंडल, 55 जिले, 54 लोकसभा एवं 324 विधानसभा सीटें थी।
- विभाजन के पश्चात् बिहार में 9 प्रमंडल, 37 जिले, 40 लोकसभा एवं 243 विधानसभा सीटें रह गयी थी।

प्राकृतिक

जलवायु	मानसूनी
ऋतुऐं	ग्रीष्म ऋतु, वर्षा ऋतु, शीत ऋतु
प्राकृतिक प्रदेश	बिहार को तीन भू-आकृतिक प्रदेशों में बाँटा जा सकता है- (i) शिवालिक श्रेणी (ii) बिहार का मैदान (iii) दक्षिणी पठारी क्षेत्र
प्रमुख नदियाँ	गंगा, कोसी, सोन, गंडक, घाघरा, कर्मनाशा, बागमती, पुनपुन, फल्गु, इत्यादि।
प्रमुख नदी घाटी परियोजनायें	सोन परियोजना (बिहार), गंडक परियोजना (बिहार, उत्तर प्रदेश, नेपाल), कोसी जल विद्युत परियोजना (बिहार व नेपाल), बाण सागर परियोजना (बिहार, उत्तर प्रदेश व मध्य प्रदेश)।
वनों के प्रकार	1. आर्द्र पर्णपाती वन 2. शुष्क पर्णपाती वन
प्रमुख वन्य जीव अभयारण्य	गौतम बुद्ध अभयारण्य (गया), वाल्मीकि नगर अभयारण्य (प. चम्पारण), परमान डॉल्फिन अभयारण्य (अररिया), भीम बांध अभयारण्य (मुंगेर), कांवर झील पक्षी अभयारण्य (बेगूसराय), गोगाबिल पक्षी अभयारण्य (कटिहार), कैमूर अभयारण्य (रोहतास), विक्रमशीला गांगेय डॉल्फिन अभयारण्य (भागलपुर) इत्यादि।
राष्ट्रीय पार्क	बाल्मीकि नगर राष्ट्रीय उद्यान, प. चंपारण

बिहार का खनिज संसाधन

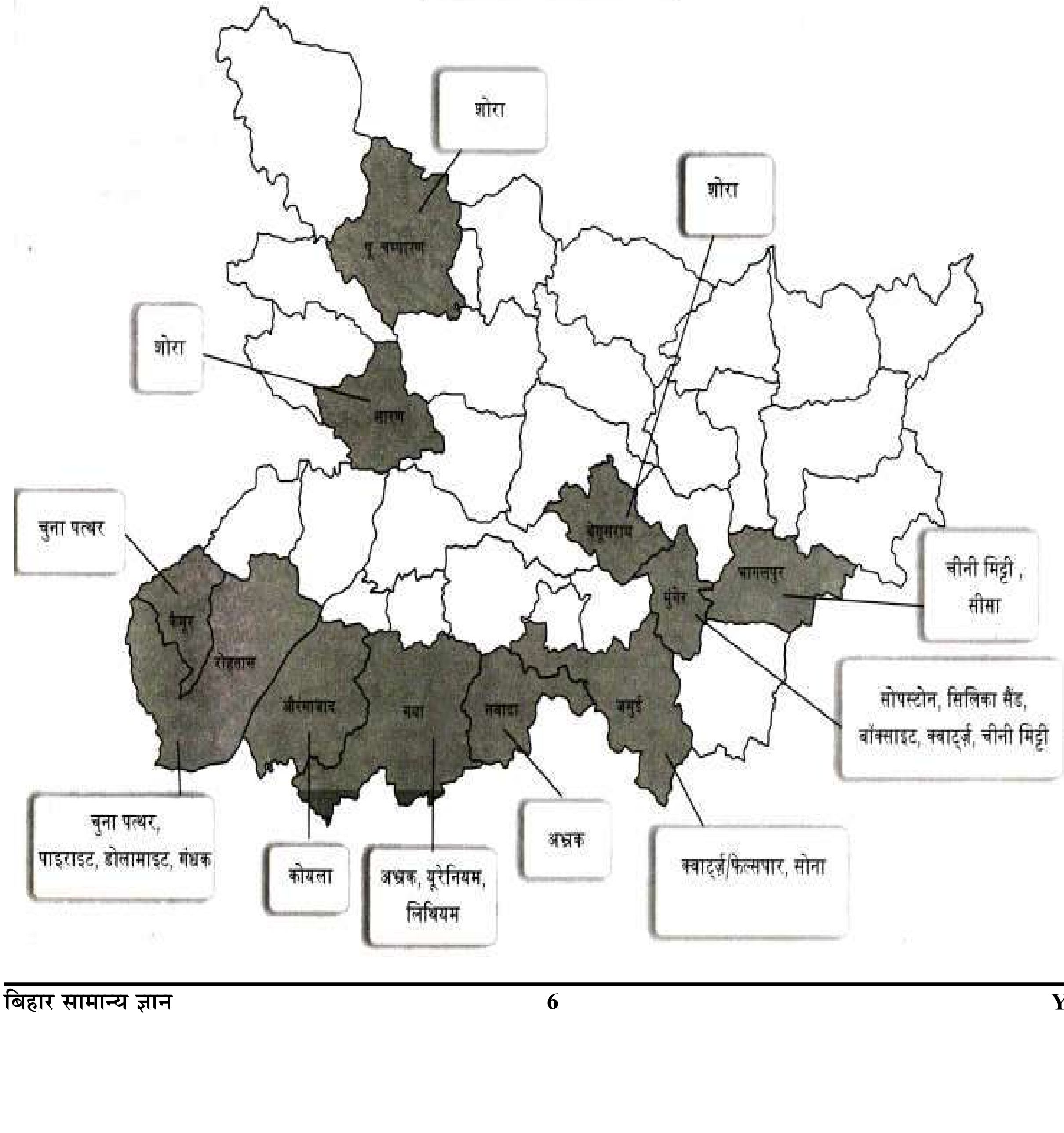

बिहार के जलप्रपात एवं झील

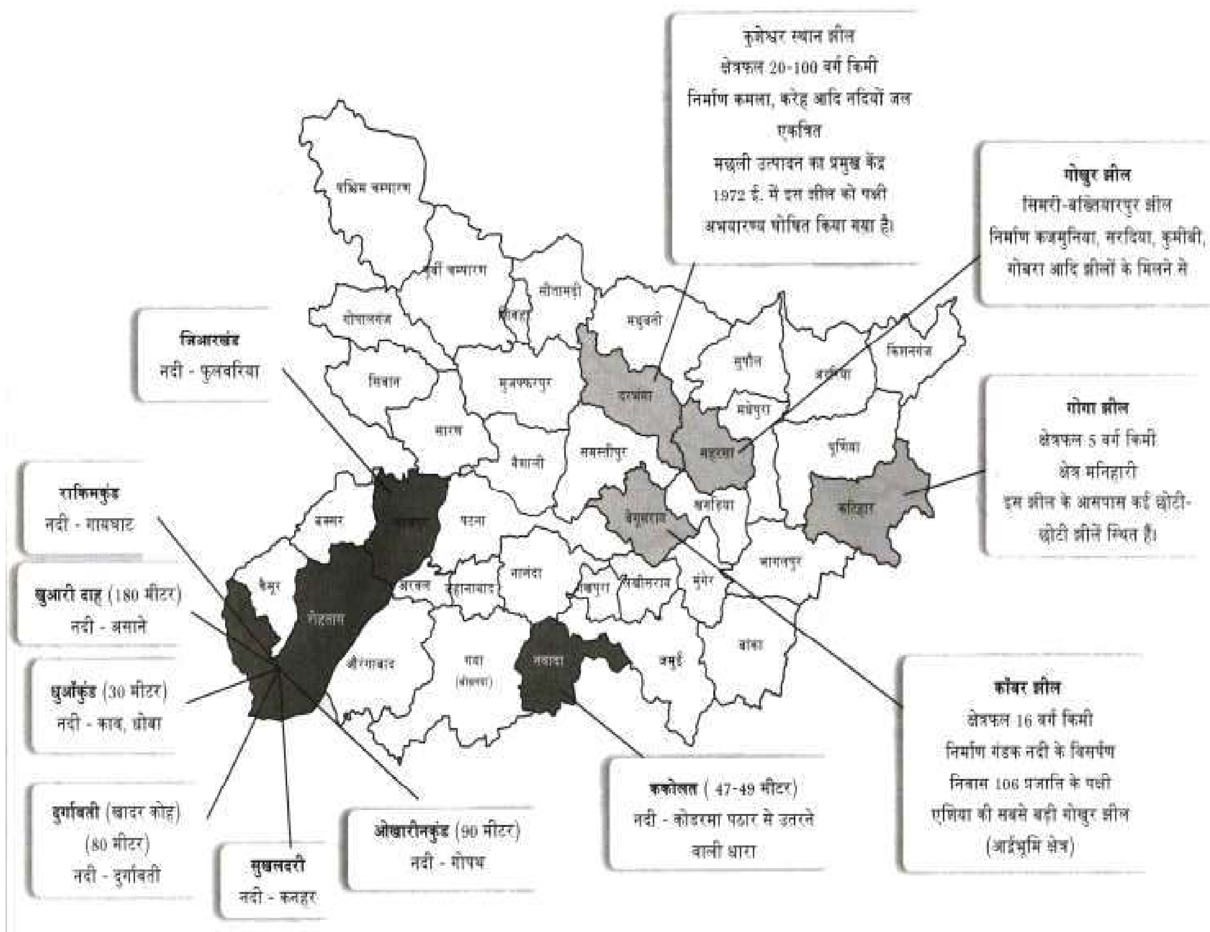

अन्य

प्रमुख लोकनृत्य	रामलीला नाच, भगत नाच, लौंडा नाच, कीर्तनिया नाच, पूजा आरती नाच, जादुर नाच, कर्मा नाच, यात्रा नाच, डोमकच नृत्य, कठघोड़वा नृत्य, जोगीड़ा नृत्य, धोबिया नृत्य, झिझिया नृत्य।
प्रमुख लोकगीत	1. ऋतु गीतों के नाम- कजरी, चैता, चतुर्माशा, बारहमासा आदि। 2. संस्कार गीत-सोहर, गौना, कोहबर, समदाउन, बेटी-विदाई आदि। 3. पेशागीत- जाँता-पिसाई, थपाई, छवाई, रोपनी, सोहनी आदि। 4. गाथागीत-लोरिकायन, सलहेस, बिजमैल, दीना-भदरी आदि। 5. पर्वगीत- छठ, तीज, जिउतिया, गोधन, रामनवमी, जन्माष्टमी, होली, दीवाली, बिरहा आदि।
प्रमुख पर्यटन स्थल	गया, पटना, नालंदा, राजगीर, वैशाली, मनेर, बिहार शरीफ, पावापुरी।
प्रमुख धार्मिक केन्द्र	बोधगया, पटना साहिब, पावापुरी, गया, फुलवारी शरीफ, मनेर, वैशाली इत्यादि।
प्रमुख मंदिर	बड़ी पाटन देवी मंदिर (पटना), छोटी पाटन देवी मंदिर (पटना), हनुमान मंदिर (पटना), अजगबीनाथ मंदिर (भागलपुर), अहिरौली मंदिर (बक्सर) इत्यादि।
प्रमुख मेलें	सोनपुर का पशु मेला, वैशाली मेला, हरिहर क्षेत्र का मेला,कार्तिक-पूर्णिमा का मेला, सौराठ का मेला, काकोलत का मेला, जानकी नवमी का मेला, मेष-संक्रांति का मेला इत्यादि।
प्रमुख बोली	मैथिली, मगधी, भोजपुरी, वज्जिका, अंगिका

बिहार : राजकीय प्रतीक

राजकीय चिह्न	–	बोधि वृक्ष
भाषा	–	हिन्दी, द्वितीय भाषा उर्दू
संविधान के 8वीं अनुसूची में शामिल बिहारी भाषाएं	–	हिन्दी, उर्दू व मैथिली।
पुष्प	–	गेंदा - टारगेट्स इरेक्टा (Targets Erecta)
पशु	–	बैल - बॉस टेरस (Bos Taurus)
पक्षी	–	गौरैया - पेसर डोमोस्टिकस (Passer Domesticus)
वृक्ष	–	पीपल - फाइकस रेलिजिओसा (Ficus Religiosa)
खेल	–	कबड्डी
नृत्य	–	जाट-जटिन
राजकीय फल	–	मैंगो (आम)
राजकीय खाना	–	लिट्टी-चोखा
राजकीय मछली	–	देशी मांगुर – क्लैरियस बेट्राकस (Clarias Batrachus)
राजकीय गीत	–	मेरे भारत के कंठहार, तुझको शत्-शत् वंदन बिहार
राजकीय प्रार्थना	–	मेरी रफ्तार पे सूरज की किरण नाज करें...............................
राज्य का महापर्व	–	छठ

बिहार में प्रथम

राज्यपाल	–	जयराम दास दौलत राम
मुख्यमंत्री	–	श्रीकृष्ण सिन्हा
विधानसभा अध्यक्ष	–	राम दयालु सिंह
प्रथम मुस्लिम राज्यपाल	–	डा. जाकिर हुसैन
प्रथम महिला मुख्यमंत्री	–	श्रीमती राबड़ी देवी
प्रथम महिला मुख्य न्यायाधीश	–	न्यायमूर्ति सुश्री रेखा मनहरलाल दोशित
प्रथम आकाशवाणी केन्द्र	–	पटना, (26 जनवरी, 1948)
प्रथम दूरदर्शन केन्द्र		मुजफ्फरपुर (14 अगस्त, 1978)
प्रथम विश्वविद्यालय	–	नालंदा विश्वविद्यालय (प्राचीन बिहार का) पटना विश्वविद्यालय (आधुनिक बिहार का प्रथम विश्वविद्यालय)

प्रथम कृषि विश्वविद्यालय	राजेन्द्र कृषि विश्वविद्यालय
प्रथम महाकवि	विद्यापति
प्रथम अंग्रेज यात्री	रॉल्फ फिंच
प्रथम सिख-गुरू यात्री	गुरू नानक
प्रथम हिन्दी दैनिक पत्र	सर्वहितैषी
प्रथम अंग्रेजी दैनिक पत्र	द सर्च लाइट
प्रथम खगोलीय वेधशाला	इंदिरा गांधी तारामण्डल पटना
प्रथम गंगा डॉल्फिन संरक्षण केन्द्र	विक्रमशिला, भागलपुर

बिहार : विश्व में प्रथम

प्रथम गणराज्य	–	वज्जि संघ (वैशाली)
प्राचीन वैभवशाली नगर	–	पाटलिपुत्र
बौद्ध धर्म के प्रवर्तक	–	गौतम बुद्ध
सर्वाधिक प्राचीनतम स्तूप	–	पिपरहवा (भारत नेपाल सीमा पर)
विश्व में प्रथम बौद्ध संगीति	–	राजगृह
विश्व में प्रथम जैन संगीति	–	पाटलिपुत्र
प्रथम गणितज्ञ	–	आर्यभट्ट
विश्व का प्रथम सम्राट जिसने अस्त्र-शस्त्र का परित्याग किया	–	अशोक
विश्व का प्रथम योग विश्वविद्यालय	–	मुंगेर

बिहार से संबंधित महत्त्वपूर्ण तथ्य

प्रथम अंतर्राष्ट्रीय विश्वविद्यालय	–	नालंदा अंतर्राष्ट्रीय विश्वविद्यालय, नालंदा (स्थापना-2013)
प्रथम ज्ञान विश्वविद्यालय	–	आर्यभट्ट ज्ञान विश्वविद्यालय, (पटना- निर्माणाधीन)
प्रथम विधि विश्वविद्यालय	–	चाणक्य राष्ट्रीय विधि विश्वविद्यालय, पटना
बिहार का प्रथम सॉफ्टवेयर टेक्नोलॉजी पार्क	–	पटना
बिहार का प्रथम टेक्सटाइल पार्क		भागलपुर (निर्माणाधीन)
बिहार में प्रथम भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान	–	IIT-बिहटा
बिहार में प्रथम राष्ट्रीय मेडिकल संस्थान	–	अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान (निर्माणाधीन)
बिहार का प्रथम अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा	–	बोध गया

बिहार के आठ जिले जिनका नाम उनके मुख्यालय से अलग हैं

जिला		**जिला मुख्यालय**
पश्चिम चम्पारण	–	बेतिया
पूर्वी चम्पारण	–	मोतिहारी
भोजपुर	–	आरा
कैमूर	–	भभुआ
सारण	–	छपरा
रोहतास	–	सासाराम
वैशाली	–	हाजीपुर
नालंदा	–	बिहार शरीफ

संभाग में शामिल जिलें

पटना (6)	मुंगेर (6)	मगध (5)	तिरहुत (6)	दरभंगा (3)	सारण (3)	पूर्णिया (4)	भागलपुर (2)	कोसी (3)
पटना (मुख्यालय)	मुंगेर (मुख्यालय)	गया (मुख्यालय)	मुजफ्फरपुर (मुख्यालय)	दरभंगा (मुख्यालय)	सारण (मुख्यालय- छपरा)	पूर्णिया (मुख्यालय)	भागलपुर (मुख्यालय)	सहरसा (मुख्यालय)
नालंदा	लखीसराय	जहानाबाद	वैशाली	मधुबनी	सीवान	अररिया	बांका	सुपौल
रोहतास	शेखपुरा	नवादा	सीतामढ़ी	समस्तीपुर	गोपालगंज	किशनगंज		मधेपुरा
कैमूर	जमुई	औरंगाबाद	पूवी चम्पारण			कटिहार		
भोजपुर	खगड़िया	अरवल	पश्चिमी चम्पारण					
बक्सर	बेगूसराय		शिवहर					

बिहार के प्रमुख कृषि संस्थानः

- राजेन्द्र कृषि विश्वविद्यालय - पूसा (समस्तीपुर)
- तिरहुत कृषि कालेज - मुजफ्फरपुर
- फैकल्टी आफ फारेस्ट्री साइंस - समस्तीपुर
- बिहार कृषि विश्वविद्यालय - सबौर (भागलपुर)

बिहार के प्रसिद्ध व्यक्ति एवं उनसे संबंधित स्थल :

- वर्धमान महावीर - कुण्डलग्राम
- चन्द्रगुप्त मौर्य - पाटलिपुत्र
- चाणक्य/कौटिल्य - पाटलिपुत्र
- अश्वघोष - पाटलिपुत्र
- शेरशाह सूरी - सासाराम (आधुनिक रोहतास जिला)
- आर्यभट्ट - पाटलिपुत्र

महत्त्वपूर्ण व्यक्ति एवं उनके उपनाम :

- डा. राजेन्द्र प्रसाद - देशरत्न, अजातशत्रु
- कुंवर सिंह - बाबू
- जयप्रकाश नारायण - लोकनायक, लोकनाथ जेपी
- डा. श्रीकृष्ण सिन्हा - बिहार केसरी
- बाबू जगजीवन राम - बाबूजी
- रामधारी सिंह दिनकर - राष्ट्रकवि
- डा. अनुग्रह नारायण सिन्हा - बिहार विभूति, बड़े साहब
- जनार्दन प्रसाद सिंह - जस्टिस आफ पीस
- नागार्जुन - बाबा

बिहार के उद्योग

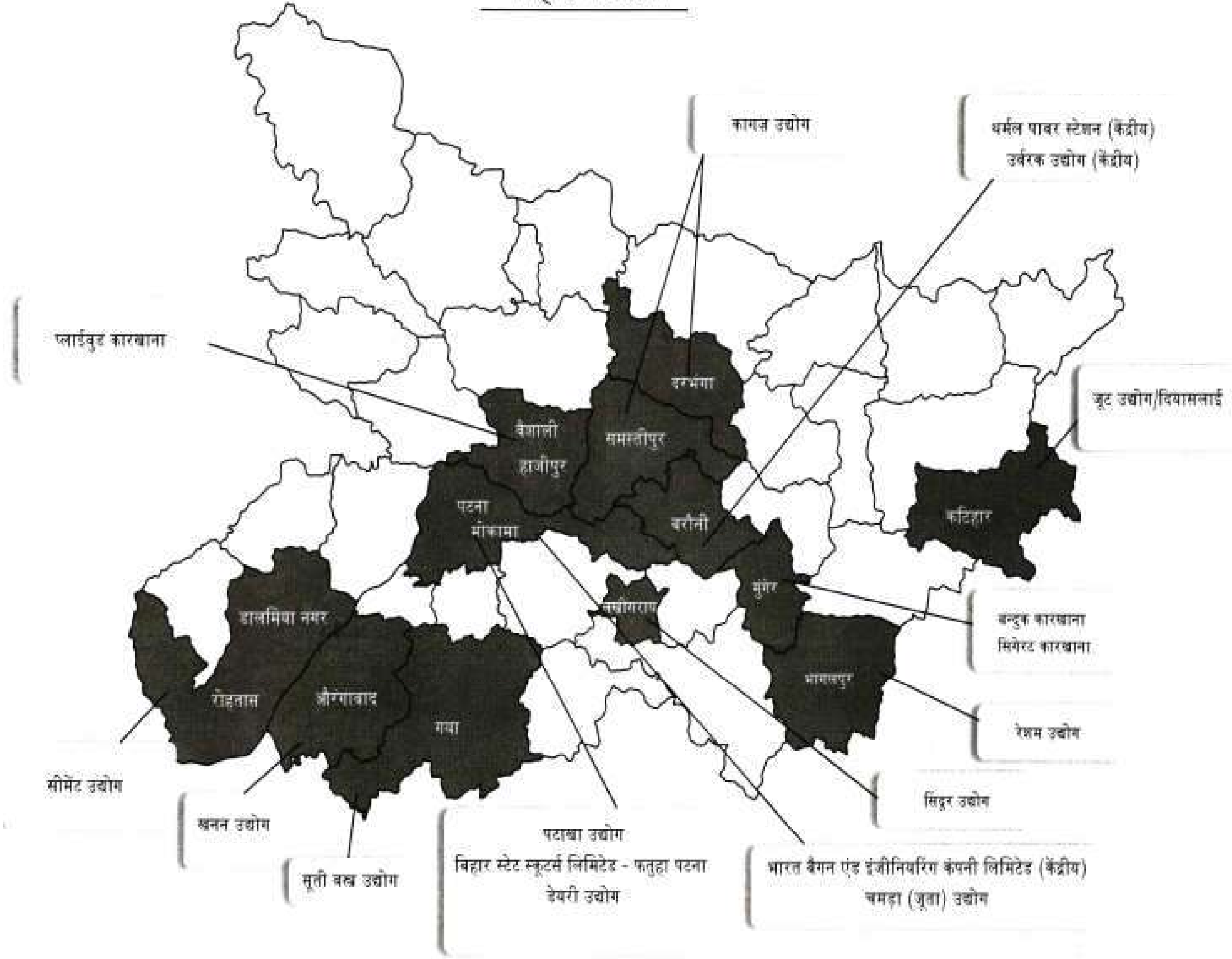

बिहार एवं भारत प्रमुख जनगणना आँकड़े

	बिहार	**भारत**
जनसंख्या	**जनगणना 2011**	**जनगणना 2011**
जनसंख्या का घनत्व	1106	382
लिंगानुपात	918	943
जनसंख्या वृद्धि दर (2001–11)	25.42 %	17.70 %
कुल जनसंख्या में ग्रामीण जनसंख्या	88.7 %	68.8 %
कुल कार्यशील जनसंख्या में काश्तकार	20.72 %	24.6 %
कुल कार्यशील जनसंख्या में खेतिहर मजदूर	52.83 %	30.00 %
कुल कार्यशील जनसंख्या में पारिवारिक उद्योग कर्मी	4.06 %	3.8 %
कुल जनसंख्या में अनुसूचित जाति की जनसंख्या	15.9 %	16.6 %
कुल जनसंख्या में अनुसूचित जनजाति की जनसंख्या	1.3 %	8.6 %
साक्षरताः		
कुल	61.8 %	73.0 %
पुरूष	71.2 %	80.9 %
स्त्री	51.5 %	64.6 %

बिहार वन रिपोर्ट-2021

- राज्य के कुल भौगोलिक क्षेत्रफल पर वनावरण एवं वृक्षावरण का हिस्सा **– 9721·79 वर्ग किमी. (10·33%)**
- राज्य के कुल भौगोलिक क्षेत्रफल पर वनावरण का हिस्सा **– 7380·79 वर्ग किमी.(7·84%)**
- राज्य के कुल भौगोलिक क्षेत्रफल पर वृक्षावरण का हिस्सा **– 2341 वर्ग किमी. (2·49%)**
- राज्य में प्रतिशतता के आधार पर सर्वाधिक वनावरण वाले 5 जिले (घटते क्रम में) **1. कैमूर (31·56%), 2. जमुई (21·34%), 3. नवादा (20·72%) 4. मुंगेर (20·16%) 5. पश्चिमी चम्पारन (17·28%)**
- राज्य में प्रतिशतता के आधार पर सबसे कम वनावरण वाले 5 जिले (बढ़ते क्रम में) **— 1. शेखपुरा (0·17%), 2. बक्सर (0·35%), 3. सिवान (0·35%), 4. गोपालगंज (0.42%), 5. जहानाबाद (0.48%),**
- राज्य में सर्वाधिक वन क्षेत्रफल वाले 5 जिले (घटते क्रम में) **— 1. कैमूर (1051·56 वर्ग किमी), 2. प. चम्पारण (903·34 वर्ग किमी), 3. रोहतास (669·91 वर्ग किमी) 4. जमुई (661.17 वर्ग किमी) 5. गया (602.55 वर्ग किमी)**
- राज्य में सबसे कम वन क्षेत्रफल वाले 5 जिले (बढ़ते क्रम में) **— 1. शेखपुरा (1·19 वर्ग किमी), 2. अरवल (4·14 वर्ग किमी), 3. जहानाबाद (4·43 वर्ग किमी), 4. बक्सर (5.89 वर्ग किमी), 5. सिवान (7.66 वर्ग किमी)**

बिहार के वन्य जीव अभ्यारण्य

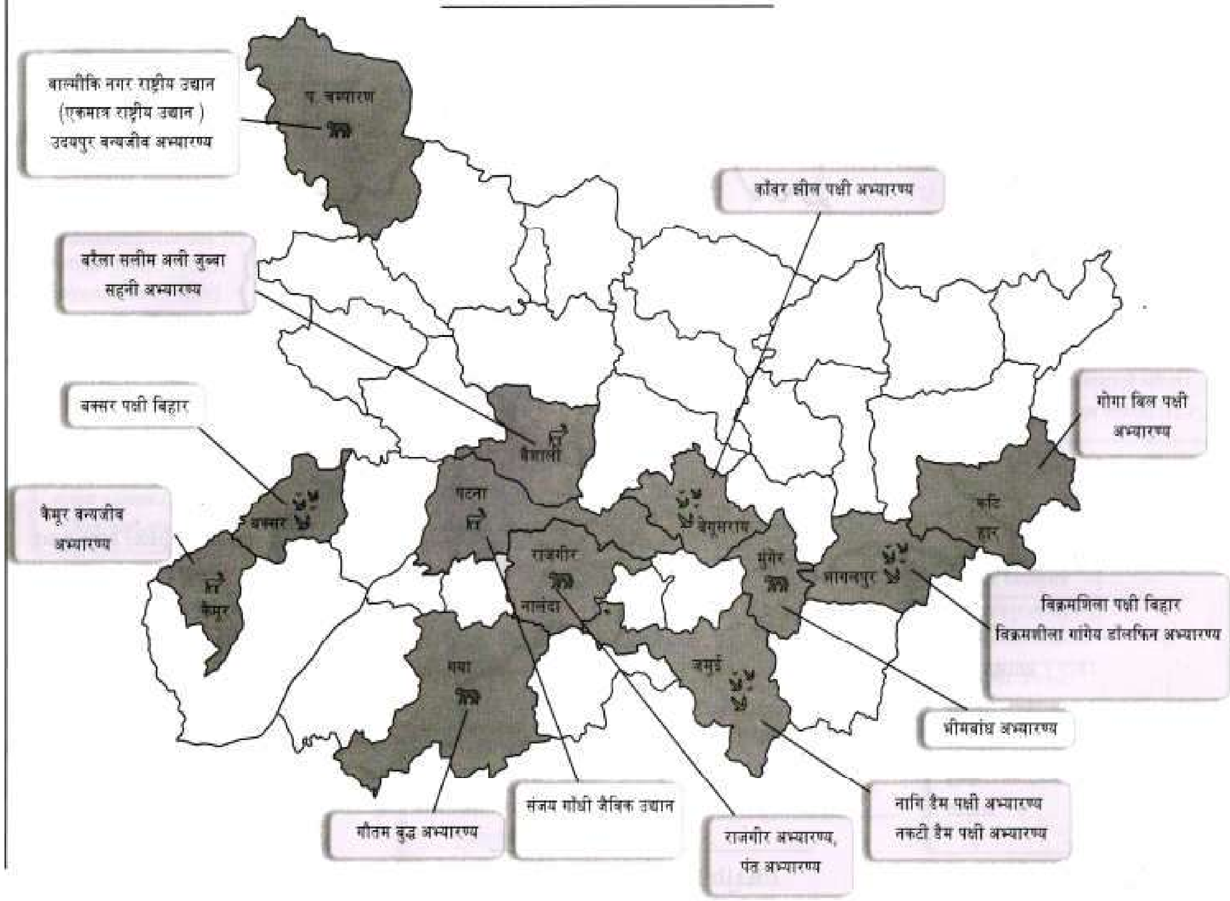

बिहार विविध

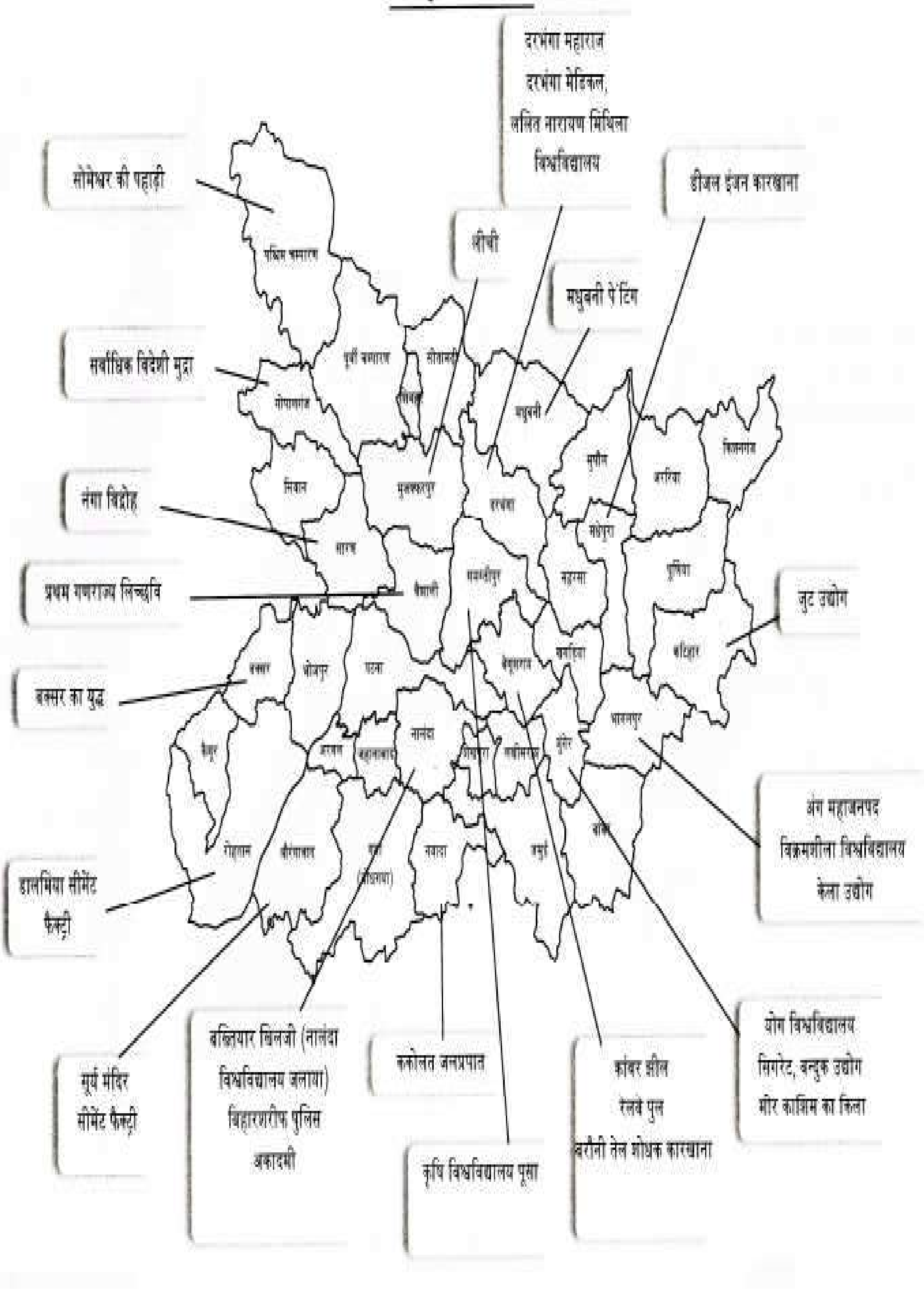

दरभंगा महाराज
दरभंगा मेडिकल,
ललित नारायण मिथिला
विश्वविद्यालय
सोमेश्वर की पहाड़ी
डीजल इंजन कारखाना
लीची
मधुबनी पेंटिंग
सर्वाधिक विदेशी मुद्रा
नंगा विद्रोह
प्रथम गणराज्य लिच्छवि
जूट उद्योग
बक्सर का युद्ध
अंग महाजनपद
विक्रमशीला विश्वविद्यालय
केला उद्योग
डालमिया सीमेंट
फैक्ट्री
योग विश्वविद्यालय
सिगरेट, बन्दुक उद्योग
मीर कासिम का किला
बख्तियार खिलजी (नालंदा
विश्वविद्यालय जलाया)
बिहारशरीफ पुलिस
अकादमी
ककोलत जलप्रपात
कांवर झील
रेलवे पुल
बरौनी तेल शोधक कारखाना
सूर्य मंदिर
सीमेंट फैक्ट्री
कृषि विश्वविद्यालय पूसा

विगत वर्षों की परीक्षाओं में पूछे गये वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. बिहार दिवस _____ मनाया जाता है।

(a) 22 मार्च को बंगाल प्रेसीडेंसी से अलग होने के उपलक्ष्य में
(b) 22 मार्च को कलकत्ता प्रेसीडेंसी से अलग होने के उपलक्ष्य में
(c) 22 मार्च को मुगल प्रेसीडेंसी से अलग होने की स्मृति में
(d) उपर्युक्त में से एक से अधिक
(e) उपर्युक्त में से कोई नहीं

BPSC TRE 3.0 (6-8) Re-exam 19/07/2024

Ans.(a): बिहार दिवस प्रत्येक वर्ष 22 मार्च, को बिहार राज्य के गठन के प्रतीक के तौर पर मनाया जाता है। 22 मार्च, 1912 को बिहार एवं उड़ीसा को बंगाल प्रांत से अलग कर नए प्रांत के रूप में पुनर्गठित किया गया था।

2. भारत के निम्नलिखित में से किस राज्य की सीमा बिहार में अधिकतम जिलों से लगती है?

(a) पश्चिम बंगाल (b) उत्तर प्रदेश
(c) झारखंड (d) उपर्युक्त में से एक से अधिक
(e) उपर्युक्त में से कोई नहीं

68th BPSC 2022

Ans. (d) : उपर्युक्त प्रश्न में उत्तर प्रदेश और झारखण्ड के 8-8 जिलें बिहार राज्य के साथ सीमा बनाते है जबकि पश्चिम बंगाल के साथ 3 जिलों से सीमा लगती है।

3. बिहार के निम्नलिखित जिलों को उत्तर से दक्षिण दिशा में व्यवस्थित करें :

1. शिवहर **2. वैशाली**
3. नालन्दा **4. नवादा**

नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए।

(a) 3, 2, 1, 4 (b) 1, 2, 3, 4
(c) 2, 3, 1, 4 (d) उपर्युक्त में से एक से अधिक
(e) उपर्युक्त में से कोई नहीं

BPSC TRE 2.0 18/12/2023 (Paper-III)

Ans. (b) उत्तर से दक्षिण दिशा में व्यवस्थित जिलों का क्रम निम्नवत् है-

शिवहर → वैशाली → नालन्दा → नवादा

4. निम्न में से कौन-सा बिहार की पश्चिमी सीमा पर स्थित है?

(a) नेपाल (b) पश्चिम बंगाल
(c) उत्तर प्रदेश (d) झारखण्ड

BPSC LDC (Pre) Exam-26.02.2022

Ans. (c) : बिहार राज्य की पश्चिमी सीमा पर स्थित राज्य उत्तर प्रदेश है। बिहार के उत्तर में नेपाल, दक्षिण में झारखण्ड, पूर्व में पश्चिम बंगाल है। उल्लेखनीय है कि उत्तर प्रदेश से लगने वाले जिलों का क्रम उत्तर से दक्षिण की ओर क्रमशः हैं- पश्चिमी चम्पारण, गोपालगंज, सिवान, सारण, भोजपुर, बक्सर और कैमूर।

5. बिहार राज्य का कुल भौगोलिक क्षेत्रफल है

(a) 94200 वर्ग किमी. (b) 94316 वर्ग किमी.
(c) 94163 वर्ग किमी. (d) 94526 वर्ग किमी.
(e) उपर्युक्त में से कोई नहीं/उपर्युक्त में से एक से अधिक

67th BPSC (Pre)(Re-exam) 2021
40th BPSC (Pre) 1995
Bihar Daroga (Pre) Exam-2023 17/12/2023 (Shift-I)

Ans. (c) : बिहार राज्य का कुल क्षेत्रफल 94,163 वर्ग किमी. है। बिहार का क्षेत्र. भारत के क्षेत्रफल का 2.86 प्रतिशत है। क्षेत्रफल के आधार पर बिहार 12वां सबसे बड़ा राज्य है तथा जनसंख्या के आधार पर तीसरा सबसे बड़ा राज्य है।

6. जुलाई 2018 तक पटना जिला बिहार के कितने जिलों से सीमाबद्ध था?

(a) 7 (b) 8
(c) 9 (d) 10
(e) उपर्युक्त में से कोई नहीं/उपर्युक्त में से एक से अधिक

64th BPSC (Pre) 2018-19

Ans. (c) : जुलाई 2018 तक बिहार का पटना जिला कुल 9 जिलों से सीमाबद्ध था। ये जिले हैं–
सारण, वैशाली, समस्तीपुर, बेगूसराय, लखीसराय, नालन्दा, जहानाबाद, भोजपुर तथा अरवल।

7. बिहार के निम्नलिखित जिलों में से कौन-सा जिला नेपाल के साथ सीमा साझा नहीं करता है?

(a) मधुबनी (b) किशनगंज
(c) सीतामढ़ी (d) पूर्णिया
(e) उपर्युक्त में से कोई नहीं/उपर्युक्त में से एक से अधिक

63th BPSC (Pre) 2017-18

Ans. (d) : बिहार पूर्वी भारत का एक प्रमुख राज्य है। यह गंगा के मैदान के समृद्ध क्षेत्र में बसा है। बिहार का विस्तार 24^0 20' 10" से 27^0 31' 15" उत्तरी अक्षांश तथा 83^0 19' 50" से 88^0 17' 40" पूर्वी देशान्तर के बीच है। इसका कुल क्षेत्रफल 94.16 लाख हेक्टेयर है। इसकी आकृति लगभग आयताकार है। क्षेत्रफल की दृष्टि से यह भारत का 12वाँ बड़ा राज्य है और इसका क्षेत्रफल देश के कुल क्षेत्रफल का 2.86 प्रतिशत है। बिहार के उत्तर में नेपाल, पूर्व में पश्चिम बंगाल, पश्चिम में उत्तर प्रदेश और दक्षिण में झारखण्ड स्थित है। बिहार की उत्तरी सीमा नेपाल से जुड़ी है। यह भारत की अन्तर्राष्ट्रीय सीमा रेखा का एक भाग है। बिहार के पं. चम्पारन, मोतिहारी, सीतामढ़ी, मधुबनी, सुपौल, अररिया, किशनगंज जिलों की सीमा नेपाल से लगती है। पूर्णिया की सीमा बिहार से नहीं जुड़ी हुई है।

8. एक भारतीय राज्य के रूप में बिहार बना–

(a) 1911 में (b) 1912 में
(c) 1936 में (d) 2000 में

Ashu ASI (P.T.) Exam-26.08.2018

Ans : (b) बिहार राज्य का गठन 22 मार्च, 1912 ई. को हुआ था। बिहार भारत का एक राज्य है। इसकी राजधानी पटना है। बिहार के उत्तर में नेपाल, पूर्व में पश्चिम बंगाल, पश्चिम में उत्तर प्रदेश और दक्षिण में झारखण्ड स्थित है। उल्लेखनीय है कि प्राचीन काल में यह बौद्ध मठों का प्रमुख केन्द्र रहा तथा बौद्ध मठों (विहारों) की अधिकता के कारण इसका नाम बिहार पड़ा।

9. बिहार की द्वितीय राजभाषा है–

(a) उर्दू (b) मैथिली
(c) भोजपुरी (d) मगही

Bihar SI Exam-12.07.2017

Ans : (a) बिहार में हिन्दी भाषा शैक्षिक और आधिकारिक मामलों के लिए इस्तेमाल की जाने वाली भाषा है जबकि 1981 में बिहार की दूसरी अधिकारिक भाषा का दर्जा 'उर्दू' को प्रदान किया गया।

10. निम्नलिखित में से कौनसा शहर बिहार के सबसे पूर्वी भाग में स्थित है?

(a) भागलपुर (b) पटना
(c) कटिहार (d) पूर्णिया

56th-59th BPSC (Pre) 2015

Ans. (c) : बिहार के सबसे पूर्वी भाग में कटिहार जिला स्थित है, पटना बिहार की राजधानी एवं बिहार राज्य का सबसे बड़ा शहर है। सबसे पश्चिमी जिला - कैमूर
सबसे उत्तरी जिला - पश्चिमी चंपारण
सबसे दक्षिणी जिला - गया

11. बिहार राज्य में कितने जिले हैं?

(a) 33 (b) 38
(c) 43 (d) 23

Bihar E.T.A. (Efficiency) Exam-15.09.2010
Bihar SSC IInd Graudate Level (Pre) Exam-23.02.2015

Ans. (b) : बिहार में कुल 38 जिले हैं। क्षेत्रफल की दृष्टि से सबसे बड़ा जिला पश्चिमी चंपारण हैं। जबकि क्षेत्रफल की दृष्टि से सबसे छोटा जिला शिवहर हैं। बिहार में विधानसभा सदस्यों की संख्या 243 तथा विधानपरिषद सदस्यों की संख्या 75 हैं।

12. बिहार राज्य में प्रमण्डलों की संख्या कितनी है?

(a) 5 (b) 7
(c) 9 (d) 11

Bihar E.T.A. (Efficiency) Exam-15.09.2010
Bihar SI Exam-23.04.2008

Ans. (c) : बिहार में 9 प्रमण्डल हैं। प्रमण्डलीय आयुक्त के माध्यम से इन प्रमण्डलों के प्रशासन का संचालन किया जाता है और प्रमण्डलीय आयुक्त मुख्य रूप से जिलाधिकारियों के कार्यों का पर्यवेक्षण करने के साथ-साथ न्यायालयों के कार्यों हेतु पर्यवेक्षक की भूमिका में होते हैं।

- जिलों की संख्या की दृष्टि से सबसे बड़े तीन प्रमण्डल हैं-
  (1) तिरहुत - 6 जिले
  (2) मुंगेर - 6 जिले
  (3) पटना - 6 जिले
- भागलपुर प्रमण्डल में मात्र दो जिले हैं। मगध प्रमण्डल में 38वें जिले के रूप में अरवल को जोड़ा गया है।

13. पाटलिपुत्र के संस्थापक ?

(a) उदयन (b) अशोक
(c) बिम्बसार (d) महा पद्मानन्द

48th-52th BPSC (Pre) 2007-2008

Ans. (a) : पाटलिपुत्र की स्थापना **अजातशत्रु** के पुत्र **उदयन** ने की थी। **पुराणों** एवं **जैन ग्रंथों** के अनुसार गंगा तथा सोन नदी के संगम पर पाटलिपुत्र नामक नगर की स्थापना कर उदयन ने उसे अपनी राजधानी बनाया। उदयन जैन धर्मावलम्बी था।

14. विश्व का पहला गणतंत्र वैशाली में किसके द्वारा स्थापित किया गया–

(a) मौर्य (b) नन्द (c) गुप्त (d) लिच्छवी

48th-52th BPSC (Pre) 2007-2008

Ans. (d) : विश्व का पहला गणतंत्र वैशाली में लिच्छवियों द्वारा स्थापित किया गया था। यह बुद्धकाल का सबसे बड़ा तथा शक्तिशाली राज्य था। इनकी राजधानी वैशाली मुजफ्फरपुर जिले के बसाढ़ नामक स्थान में स्थित थी। 'महाग्ग जातक' में वैशाली को एक धनी, समृद्धशाली तथा घनी आबादी वाला नगर कहा गया है। लिच्छवि वज्जिसंघ में सर्वप्रमुख था।

15. बोध गया में 'बोधि वृक्ष' अपने वंश की इस पीढ़ी का है–

(a) तृतीय (b) चतुर्थ (c) पंचम (d) षष्ठम

48th-52th BPSC (Pre) 2007-2008

Ans. (c) : बोधगया में बोधवृक्ष अपने वंश की पांचवीं पीढ़ी का वृक्ष है। जिसे अलेक्जेंडर कनिंघम ने लगवाया था। पूरी दुनिया में मौजूद बौद्ध धर्म मानने वालों के लिए बिहार के गया जिले में स्थित बोधगया सबसे पवित्र तीर्थस्थल है। इसी जगह भगवान बुद्ध को ज्ञान की प्राप्ति हुई थी। भगवान बुद्ध ने पीपल के नीचे ध्यान लगाया था। बुद्ध की ज्ञान की प्राप्ति होने के बाद उस पेड़ को बोधि वृक्ष कहा जाने लगा।

16. बिहार के सीमावर्ती राज्यों की संख्या है–

(a) तीन (b) चार (c) पाँच (d) छः

DRDA Clerk/Computer Operator (Group-III) Exam-15.03.2007

Ans. (a) : बिहार भारत का एक प्रमुख राज्य है बिहार के पूर्व में पश्चिम बंगाल, पश्चिम में उत्तर प्रदेश व दक्षिण में झारखण्ड राज्य है। अतः इसके सीमावर्ती राज्यों की कुल संख्या 3 है।

17. बिहार की लगभग 55 प्रतिशत जनसंख्या परम निर्धनता में रहती है, क्योंकि -

I. बिहार के पास प्राकृतिक संसाधनों वर्तमान एवं संभाव्य दोनों का अभाव है
II. भारत में बिहार की सकल प्रजनन दर तीव्रतम है
III. बिहार की कृषि-जलवायुविक दशाएँ नितान्त प्रतिकूल हैं
IV. बिहार के पास गुणवत्तायुक्त ढांचागत सुविधाओं तथा व्यापारानुकूल वातावरण का अभाव है

इन कारणों में से कौन से सही हैं?

(a) I तथा II (b) II तथा III
(c) II तथा IV (d) I, III तथा IV

47th BPSC (Pre) 2004-2005

Ans. (c) : बिहार की लगभग 55% जनसंख्या परम निर्धनता में निवास करती है। क्योंकि भारत में बिहार की सकल प्रजनन दर तीव्रतम है। साथ ही बिहार के पास गुणवत्तायुक्त ढांचागत सुविधाओं तथा व्यापारानुकूल वातावरण का अभाव है। हाल ही में नीति आयोग द्वारा जारी बहुआयामी गरीबी सूचकांक, 2021 में बिहार को देश का सबसे गरीब राज्य बताया गया है। बिहार की 51.91% जनसंख्या गरीब है।

18. बिहार का कौन सा जिला न्यूनतम क्षेत्रफल वाला है?

(a) गया (b) शेखपुरा
(c) बक्सर (d) सारण

BSSC Amin (Amanat) Rect. Exam-01.05.2005

Ans. (b) : बिहार का न्यूनतम क्षेत्रफल वाला जिला शिवहर < अरवल < शेखपुरा हैं। चूंकि विकल्प में शिवहर व अरवल का अभाव है अतः शेखपुरा न्यूनतम क्षेत्रफल वाला जिला होगा। पं. चंपारण बिहार राज्य का सबसे बड़ा जिला है।

19. भौगोलिक क्षेत्रफल की दृष्टि से भारत में बिहार का क्रम क्या है?

(a) दूसरा (b) चतुर्थ
(c) बारहवां (d) नवम्

उत्तर-(*)

46th BPSC (Pre) 2003-2004

व्याख्या : प्रश्नकाल के दौरान क्षेत्रफल की दृष्टि से बिहार का 12वां स्थान था। वर्तमान समय में बिहार क्षेत्रफल की दृष्टि से भारत का 13वां राज्य है। बिहार का कुल क्षेत्रफल 94,163.03 वर्ग किमी है, जो कि भारत के कुल क्षेत्रफल का 2.86 प्रतिशत है।

20. झारखण्ड बिहार से कब पृथक् हुआ था?

(a) 15 नवम्बर, 2000 (b) 25 अगस्त, 1999
(c) 2 अगस्त, 1998 (d) 5 जुलाई, 1997

उत्तर-(a)

46th BPSC (Pre) 2003-2004
44th BPSC (Pre) 2000-2001

व्याख्या : बिहार से अलग हुए राज्य झारखण्ड का निर्माण 15 नवम्बर, 2000 को हुआ। यह देश का 28वां राज्य है। इसका विस्तार उत्तरी गोलार्द्ध में 21°58' से 25°18' उत्तरी अक्षांश के बीच स्थित है। इसका देशांतरीय विस्तार $83^0$22' पूर्व से 87°57' उत्तरी अक्षांश के बीच है। झारखण्ड का लगभग पूरा भाग पठारी है। यह राज्य स्थलीय सीमाओं से घिरा है। इसकी बाहरी सीमा 5 राज्यों - बिहार, पश्चिमी बंगाल, ओड़िसा, छत्तीसगढ़ व उत्तर प्रदेश की सीमाओं को स्पर्श करती है। झारखण्ड राज्य का कुल क्षेत्रफल 79,714 वर्ग किमी है। देश के कुल क्षेत्रफल में झारखण्ड राज्य का हिस्सा 2.42 प्रतिशत है। यह क्षेत्रफल की दृष्टि से भारत के राज्यों में 15वें स्थान पर है।

21. बिहार राज्य विभाजित कर झारखण्ड राज्य कब बनाया गया?

(a) नवम्बर, 1999 (b) नवम्बर, 2000
(c) नवम्बर 2001 (d) नवम्बर, 2002

Bihar Police CSBC (Constable) Exam-15.10.2017

Ans. (b) : उपरोक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

22. मूल रूप से 'बिहार' शब्द का अर्थ है

(a) बौद्ध मठ (b) देवदूतों की भूमि
(c) आर्य प्रदेश (d) हरियाली का प्रदेश

उत्तर-(a)

45th BPSC (Pre) 2002

व्याख्या : 'बिहार' शब्द 'विहार' से बना है। ऐसा माना जाता है कि इस क्षेत्र में बौद्ध मठों (विहारों) की अधिकता के कारण इस क्षेत्र का नाम बिहार पड़ा। उल्लेखनीय है कि यह क्षेत्र प्राचीन समय में बौद्ध धर्म का प्रमुख केन्द्र रहा है।

23. झारखंड बनने के पश्चात् बिहार में लगभग कितने जिले रह गए हैं?

(a) 37 (b) 65
(c) 60 (d) 62

उत्तर-(a)

45th BPSC (Pre) 2002

व्याख्या : झारखण्ड बनने के पश्चात वर्तमान बिहार में लगभग 37 जिले थे। वर्तमान में जिलों की कुल संख्या 38 हो गयी है। नवीनतम जिला अरवल है जो जहानाबाद से पृथक कर बनाया गया है। यहीं लोकसभा सीटें 40 तथा राज्यसभा सीटें 16 हैं और विधानसभा सीट 243 तथा विधान परिषद सीट 75 है। क्षेत्रफल 94163 वर्ग किमी. है। कुल खेती योग्य भूमि 10.51 लाख हेक्टेयर है। जनसंख्या की दृष्टि से देश में तीसरा और क्षेत्रफल की दृष्टि से 12वां स्थान है।

24. पटना महानगरपालिका में वार्डों की संख्या है

(a) 57 (b) 67
(c) 64 (d) 59

उत्तर-(a)

45th BPSC (Pre) 2002

व्याख्या : प्रश्नकाल के समय पटना महानगरपालिका में वार्डों की संख्या 57 थी। वर्तमान में यह संख्या बढ़कर 75 हो गयी है। पटना नगर निगम पटना शहर का स्थानीय शहरी शासी निकाय हैं पटना नगर निगम में एक महापौर, उपमहापौर एवं 73 अन्य वार्ड पार्षद होते हैं। यह नागरिक प्रशासनिक निकाय 108.87 किमी. की क्षेत्र का प्रशासन करता है।

25. कौन-सा राज्य डाक क्षेत्र ''आठ'' के अन्तर्गत आता है?

(a) उड़ीसा (b) बिहार
(c) मध्य प्रदेश (d) पश्चिम बंगाल

Bihar Product SI (Pre) Exam-02.12.2002

Ans : (b) डाक पिनकोड की व्यवस्था 15 अगस्त, 1972 ई. से लागू की गयी है। भारत में 9 पिन क्षेत्र है जिसमें पिन क्षेत्र–8 बिहार और झारखण्ड को सन्दर्भित करता है। उल्लेखनीय है कि पिन (Postal Index Number) कोड 6 अंकों का कोड है जिसका प्रयोग भारतीय डाक द्वारा स्थानीय सूचक के रूप में किया जाता है।

26. बिहार के कौन-से तीन जिले पश्चिम बंगाल सीमा पर स्थित हैं?

(a) रोहतास, औरंगाबाद, गया
(b) भागलपुर, मधेपुरा, खगड़िया
(c) कटिहार, पूर्णियाँ, किशनगंज
(d) इनमें से कोई नहीं

Bihar Product SI (Pre) Exam-02.12.2002

Ans : (c) बिहार के उत्तर में नेपाल, पूर्व में पश्चिम बंगाल, पश्चिम में उत्तर प्रदेश और दक्षिण में झारखण्ड राज्य स्थित है। बिहार के कटिहार, पूर्णिया तथा किशनगंज पश्चिम बंगाल की सीमा पर स्थित तीन जिले हैं। उल्लेखनीय है कि कटिहार की सीमा पश्चिम बंगाल के साथ-साथ झारखण्ड से भी लगी हुई है।

27. बिहार के कौन-से दो जिले झारखण्ड से सीमा बनाते हैं?

(a) मुंगेर, गया (b) भोजपुर, जहानाबाद
(c) सीवान, सारण (d) बेगूसरायय, खगड़िया

Bihar Product SI (Pre) Exam-02.12.2002

Ans : (*) झारखण्ड के साथ बिहार के 8 जिले सीमा बनाते हैं जो कि रोहतास, औरंगाबाद, गया, नवादा, जमुई, बांका, भागलपुर, कटिहार है। उपर्युक्त दिये गये विकल्पों में कोई भी विकल्प सही नहीं है। उल्लेखनीय है कि उत्तर प्रदेश के साथ बिहार के 8 जिले तथा पश्चिम बंगाल के साथ तीन जिले सीमा बनाते हैं।

28. बिहार के निम्न जिले में सबसे बड़ा जिला है-

(a) पटना (b) गया
(c) दरभंगा (d) समस्तीपुर

उत्तर-(b)

44th BPSC (Pre) 2000-2001

व्याख्या- पटना जिले का क्षेत्रफल-3202 वर्ग किमी., गया जिले का क्षेत्रफल-4978 वर्ग किमी., दरभंगा जिले का क्षेत्रफल-2279 वर्ग किमी. तथा समस्तीपुर जिले का क्षेत्रफल-2905 वर्ग किमी. है।

29. 'पट' अंचल (Region) अवस्थित है-

(a) बिहार में (b) झारखण्ड में
(c) मध्य प्रदेश में (d) मेघालय में

उत्तर-(b)

44th BPSC (Pre) 2000-2001

व्याख्या - पट अंचल झारखण्ड के छोटा नागपुर के पठारी प्रदेश में अवस्थित है। रांची, पट के पठार पर अवस्थित है।

30. बिहार में पागलखाना कहाँ पर स्थित है-

(a) धनबाद (b) नालन्दा (c) पटना (d) रांची

उत्तर-(*)

43th BPSC (Pre) 1999

व्याख्या- प्रश्नकाल के समय रांची (अब झारखण्ड) में मानसिक रोग अनुसंधान संस्थान स्थित है। रांची में झारखण्ड स्टेट बेकन फैक्ट्री, झारखण्ड हिल एरिया, लिफ्ट इरीगेशन कार्पोरेशन स्थित है। धनबाद झारखण्ड राज्य का सर्वाधिक जनघनत्व वाला जिला है। नालन्दा में विश्व प्रसिद्ध प्राचीन बौद्ध विश्वविद्यालय स्थित है। राज्य सरकार ने यहां नव नालन्दा महाविहार नामक शोध संस्थान की स्थापना की है। यहां एक पुरातत्व संग्रहालय भी है। पटना का प्राचीन नाम पाटलिपुत्र था, जो मगध साम्राज्य की राजधानी थी। यह नगर 'पुष्पपुर' या 'कुसुमपुर' भी कहलाता था। यहीं पर चन्द्रगुप्त मौर्य ने मौर्यवंश की नींव डाली थी।

31. सबसे बड़ा नगर है-

(a) धनबाद (b) गया
(c) पटना (d) रांची

उत्तर-(c)

43th BPSC (Pre) 1999

व्याख्या- बिहार में जनसंख्या के आधार पर पटना सबसे बड़ा नगर है। जिसकी आबादी (16,84,222) है।

शहर	**जनसंख्या**
जमशेदपुर	1337131
धनबाद	1195298
रांची	1126741

देश की कुल जनसंख्या में बिहार का हिस्सा 8.6 प्रतिशत है परन्तु देश की शहरी आबादी में बिहार की हिस्सेदारी 3.1 प्रतिशत ही है। जनगणना 2011 आंकड़ो के आधार पर बिहार में कुल जनसंख्या का 88.7 प्रतिशत ग्रामीण तथा 11.3 नगरीय है।

32. सन् 1995 की समाप्ति पर बिहार में जिलों की कुल संख्या थी -

(a) 55 (b) 52
(c) 50 (d) उपरोक्त में से कोई नहीं

उत्तर-(a)

41th BPSC (Pre) 1996

व्याख्या- वर्ष 1995 की समाप्ति पर बिहार में जिलों की संख्या 55 थी सन् 2000 में झारखण्ड राज्य बनने पर 18 जिले झारखण्ड राज्य के अंग हो गये। वर्तमान में 2019, बिहार में जिलों की संख्या 38 है। वर्ष 1951 में 18 जिले, 1981 में 31 जिले और 1991 में 55 जिले थे।

33. क्षेत्रफल के अनुसार निम्नलिखित राज्यों का सही अवरोही क्रम क्या है?

1. आंध्र प्रदेश 2. बिहार
3. मध्य प्रदेश 4. उत्तर प्रदेश

कूट :

(a) 3, 2, 4, 1 (b) 1, 2, 3, 4
(c) 4, 3, 2, 1 (d) 3, 4, 1, 2

उत्तर-(d)

40th BPSC (Pre) 1995

व्याख्या- क्षेत्रफल के अनुसार राज्यों का अवरोही क्रम- मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश, आंध्र प्रदेश तथा बिहार है। इनका क्षेत्रफल निम्नवत् हैं-मध्य प्रदेश 3,082,45 वर्ग किमी., उत्तर प्रदेश 2,40,928 वर्ग किमी., आंध्र प्रदेश-1,60,205 वर्ग किमी., तथा बिहार-94163 वर्ग किमी.। क्षेत्रफल के आधार पर बिहार का 12वां स्थान है।

34. बिहार राज्य अवस्थित है निम्न देशान्तरों (Longitude) के मध्य?

(a) लगभग 84° पूर्व से 88° पूर्व
(b) लगभग 80° पूर्व से 84° पूर्व
(c) लगभग 80° पूर्व से 88° पूर्व
(d) इनमें से कोई नहीं

उत्तर-(a)

38th BPSC (Pre) 1992-93

व्याख्या—बिहार राज्य 83°19'50" पूर्व से 88°17'40" पूर्वी देशान्तर के मध्य स्थित है। बिहार का अक्षांशीय विस्तार 24° 10" से 24° 31'15" तक है।

प्राचीन बिहार

- ऐतिहासिक दृष्टि से बिहार प्राचीन भारत का एक समृद्ध एवं वैभवशाली क्षेत्र रहा है।
- बिहार की समृद्धि को देखते हुए इसे भारतीय इतिहास का गर्भगृह कहा जाता है।
- प्रागैतिहासिक काल से ही यह मानव सभ्यता एवं संस्कृति का एक महत्वपूर्ण केन्द्र था जिसका देश के इतिहास और सांस्कृतिक जीवन में निर्णायक भूमिका रही है।
- बिहार नाम का प्रादुर्भाव संस्कृत शब्द विहार से हुआ जिसका अर्थ है निवास। स्वयं विहार शब्द की व्युत्पत्ति ब्रह्मबिहार शब्द से हुई जिसका अर्थ है 'उत्तम शैली' का 'ब्रह्मा का वास'। बिहार का उल्लेख वेदों, पुराणों और प्राचीन महाकाव्यों आदि में मिलता है।
- मगध और लिच्छवी गणराज्य के शासनकाल की कार्यपद्धति से ही भारत में आधुनिक प्रशासनिक व्यवस्था की शुरूआत हुई।
- दुनिया का पहला गणराज्य (लोकतांत्रिक व्यवस्था का जनक) वैशाली बिहार का ही अंग है।
- बिहार का वर्णन हमारे दो महान ग्रंथों रामायण एवं महाभारत में किया गया है।
- एक ओर मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम ने बक्सर के निकट गुरुकुल में ऋषि विश्वामित्र से शिक्षा ग्रहण की थी तो दूसरी ओर बौद्ध धर्म के प्रवर्तक गौतम बुद्ध और जैन धर्म के 24वें तीर्थंकर भगवान महावीर को बिहार की इस ऐतिहासिक भूमि में ही ज्ञान प्राप्त हुआ था।

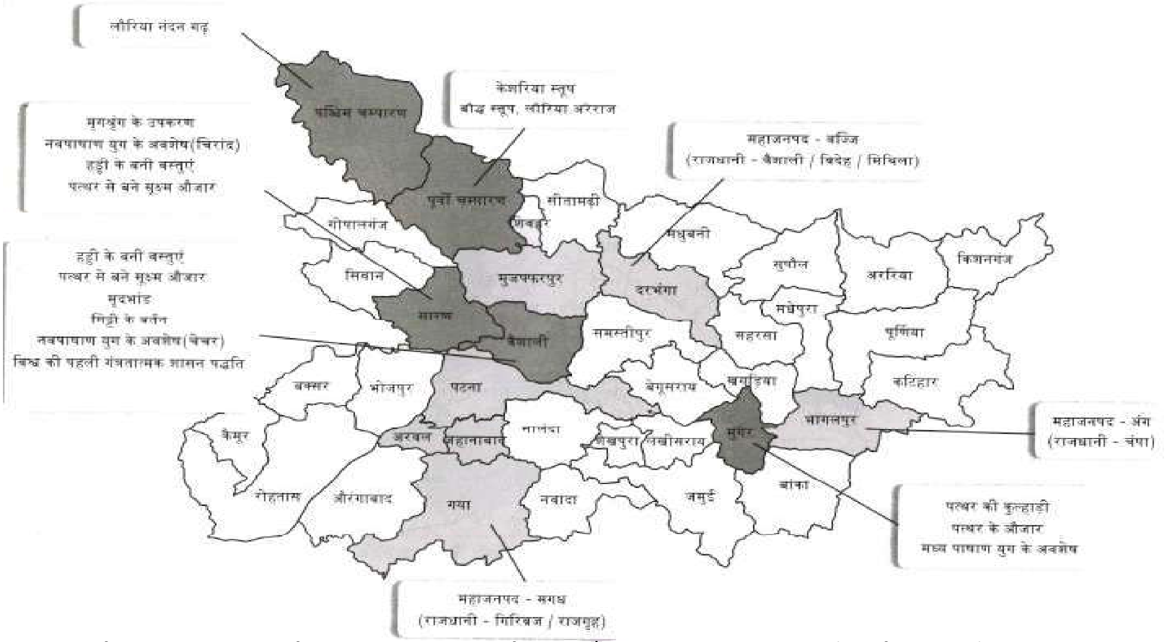

काल खण्ड के अनुसार बिहार के प्राचीन इतिहास को निम्न भागों में बाँटा जा सकता है-

(1) पूर्व पाषाण युग (2) मध्य पाषाण युग
(3) नव पाषाण युग (4) ताम्र पाषाण युग
(5) वैदिक काल (6) महाजनपद काल

पूर्व पाषाण युग (100000 ई.पू.)

- खुरपी रजज्पा (हजारी बाग), संजय घाटी एंव सोना नाला के संगम (सिंहभूम) से आरम्भिक प्रस्तर युग के अवशेष कुलहाड़ी, चाकू व फाल प्राप्त हुए हैं।
- उपरोक्त साक्ष्य जेठियन (गया), भीम बांध (मुंगेर) तथा नालंदा जिले से उत्खनन में भी प्राप्त हुए हैं।
- मुंगेर जिले के पैसरा नामक स्थल के उत्खनन से पुरापाषाण कालीन एल्यूशरी संस्कृति से सम्बन्धित उपकरण प्राप्त हुए हैं।

मध्य पाषाण युग (100000 ई.पू. से 40,000 ई.पू.)

- मुख्यतः पैसरा (मुंगेर) से मध्यपाषाण युगीन अवशेष प्राप्त हुए हैं।,

नवपाषाण युग (2500 ई.पू. से 1500 ई.पू.)

- नव पाषाण युग में ऐतिहासिक साक्ष्य के रूप में पत्थर के सूक्ष्म औजार और हड्डियों से बनी वस्तुएँ प्राप्त हुई हैं।
- नव पाषाण युगीन अवशेष उत्तर बिहार के चिरांद (सारण) और चेचर (वैशाली) से प्राप्त हुए हैं।

ताम्र पाषाण युग (3000 ई. पू. से 1000 ई.पू.)

- ओरियप (भागलपुर), सोनपुर (गया) और मांझी (छपरा) के ताम्रपाषाणिक स्थल से बिहार में आबादी का पहला प्रमाण मिलता है।
- बिहार में ताम्रपाषाण युग के अवशेष घोड़ा कटोरा (राजगीर), चिरांद (सारण), चेचर (वैशाली), सेनुआर (सासाराम), ओरियप (भागलपुर), मनेर (पटना), सोनपुर (गया), ताराडीह (बोधगया), पांड (समस्तीपुर) में पाए गए हैं।
- इस काल में प्राप्त काले और लाल मृदभाण्ड सामान्यतः हड़प्पा सभ्यता की विशेषता माने जाते हैं।

वैदिक कालीन बिहार

- वर्तमान पटना, गया, औरंगाबाद, जहानाबाद, नालंदा, एवं नवादा जिलों का क्षेत्र मगध महाजनपद में शामिल था।
- मगध का सर्वप्रथम उल्लेख अथर्ववेद में मिलता है। मगध क्षेत्र को ऋग्वेद में कीकट प्रदेश (जिसका शासक परमांगद था) तथा इस क्षेत्र में निवास करने वाले लोगों को 'व्रात्य' कहा गया है।
- भारत में आर्य सर्वप्रथम सप्तसैंधव प्रदेश (सिंधु की पाँच सहायक नदियों तथा सरस्वती नदी का सम्मिलित क्षेत्र) में बसना प्रारम्भ किए। बिहार में वैदिक संस्कृत का प्रसार मुख्यतः उत्तर वैदिक काल में हुआ। बिहार का आर्यीकरण इसी काल में आरम्भ हुआ।
- इसी काल में (लगभग ८०० ई.पू.) रचित शतपथ ब्राह्मण में पहली बार वर्तमान बिहार के भौगोलिक क्षेत्र की चर्चा मिलती है। शतपथ ब्राह्मण के अनुसार गंडक नदी (सदानीरा नदी) के तट तक आने वाले लोग विदेह (वर्तमान-तिरहुत-मिथिला) में निवास ग्रहण किये।
- शतपथ ब्राह्मण में उल्लेख है कि विदेह माधव ने अपने गुरू राहुगण की सहायता से सदानीरा के आस-पास के क्षेत्र को अग्नि-द्वारा साफ किया था।

वेद/उपनिषद् से लिए गए आदर्श वाक्य		
1	ऊँ भूर्भुवः स्वः (गायत्री मंत्र)	ऋग्वेद
2	सत्यमेव जयते	मुण्डकोपनिषद्
3	वसुधैव कुटुम्बकम्	मुण्डकोपनिषद
4	अतिथि देवो भव	तैत्तिरीय उपनिषद्
5	मातृ देवो भव	तैत्तिरीय उपनिषद्
6	सर्वे भवन्तु सुखिनः	वृहदारण्यक उपनिषद्
7	तमसो मा ज्योतिर्गमय	वृहदारण्यक उपनिषद्

वैदिक कालीन नदियाँ

नदी	प्राचीन नाम
सतलज	शतुद्रि
व्यास	विपाशा
रावी	परुष्णी
झेलम	वितस्ता
चेनाब	अस्किनी
गंडक	सदानीरा
सिन्ध	सिन्धु
घग्गर	दृशद्वती
आर्यों द्वारा क्षेत्र का नामकरण	
हरियाणा-पंजाब का क्षेत्र	ब्रह्मावर्त
गंगा-यमुना दोआब क्षेत्र	ब्रह्मर्षि देश
हिमालय से विंध्य तक का क्षेत्र	मध्य देश
मध्य देश + बिहार एवं बंगाल का क्षेत्र	आर्यावर्त

महाजनपद काल में बिहार

- लगभग छठीं शताब्दी ई.पू. में बुद्ध के जन्म से पूर्व भारतवर्ष 16 महाजनपदों में बंटा था।
- 16 महाजनपदों का उल्लेख हमें बौद्ध-ग्रंथ 'अंगुत्तर निकाय' एवं जैन ग्रंथ 'भगवती सूत्र' में मिलता है।
- उस समय भारत के सोलह महाजनपदों में से तीन अंग, वज्जि और मगध बिहार में थे।

16 महाजनपद

	महाजनपद	राजधानी	विस्तार
1.	अंग	चम्पा	वर्तमान भागलपुर एवं मुंगेर के प्रमंडल तथा झारखंड के साहिबगंज एवं गोड्डा जिलों के कुछ हिस्से
2.	मगध	राजगृह/ गिरिव्रज	वर्तमान पटना और गया के प्रमंडलों वाले जिले
3.	वज्जि	वैशाली	आठ कबीलाई गणराज्यों का संघ, बिहार में गंगा नदी के उत्तर में स्थित था।
4.	मल्ल	कुशीनगर और पावा	यह भी एक गणराज्य संघ था जिसमें आधुनिक पूर्वी उत्तर प्रदेश के देवरिया, बस्ती, गोरखपुर और सिद्धार्थनगर जिले आते थे।
5.	काशी	वाराणसी	वर्तमान में बनारस का इलाका।
6.	कोशल	श्रावस्ती	वर्तमान का फैजाबाद, गोंडा, बहराइच आदि जिले
7.	वत्स	कौशाम्बी	वर्तमान समय के कौशाम्बी, प्रयागराज और मिर्जापुर आदि जिले इसके अंतर्गत आते थे।
8.	चेदी	सुक्तिमति	आधुनिक बुंदेलखंड का क्षेत्र।
9.	कुरु	इंद्रप्रस्थ	यमुना नदी के पश्चिम में पड़ने वाले इलाके हरियाणा और दिल्ली।
10.	पांचाल	अहिछत्र/ काम्पिल्य	पश्चिमी उत्तर प्रदेश से यमुना नदी के पूर्व के इलाके
11.	शूरसेन	मथुरा	इसमें आज का ब्रजमंडल क्षेत्र शामिल था।
12.	मत्स्य	विराटनगर	इसमें राजस्थान के अलवर, भरतपुर और जयपुर के इलाके थे।
13.	अवंती	उज्जैनी/ महिष्मति	आधुनिक मालवा (राजस्थान- मध्य प्रदेश) का क्षेत्र।
14.	अश्मक	पाटन/ पोतन	महाराष्ट्र, नर्मदा और गोदावरी नदियों के बीच
15.	गांधार	तक्षशिला/ पुष्कलावती	इसके अंतर्गत पाकिस्तान के पश्चिमी इलाके और पूर्वी अफगानिस्तान के इलाके आते थे।
16.	कंबोज	राजपुर/ हाटक	इसकी पहचान पाकिस्तान के हजारा जिले के तौर पर की गई है।

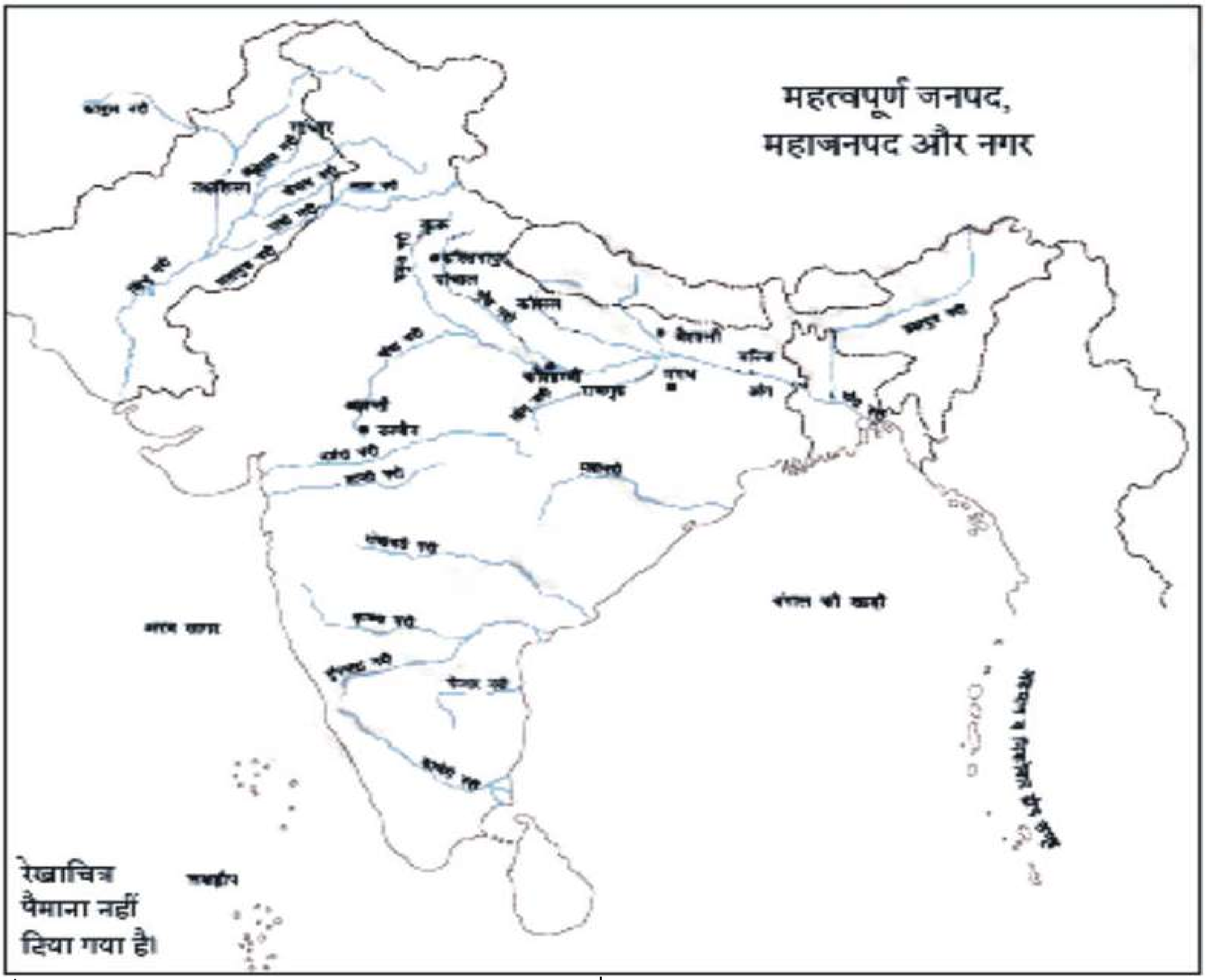

अंग

- आधुनिक बिहार के भागलुपर और मुंगेर जिले अंग महाजनपद में शामिल थे।
- अंग राज्य का सर्वप्रथम उल्लेख अथर्ववेद में मिलता है। अंग राज्य में कुल 25 राजा हुए, तितुक्षी पहला राजा था।
- महाजनपद काल में अंग राज्य के अंतिम तीन राजा दधिवाहन, द्रधवर्मन और ब्रह्मदत्त थे।
- दधिवाहन की पुत्री चंदना महावीर से प्रेरित होकर जैन धर्म को स्वीकार करने वाली पहली महिला थी।
- अंग राज्य के अंतिम शासक ब्रह्मदत्त के समय मगध के शासक बिम्बिसार ने अंग को अपने साम्राज्य में मिला लिया।

वज्जि संघ

- वर्तमान तिरहुत प्रमण्डल में गंगा नदी के उत्तर में लिच्छवियों का गणराज्य स्थित था, जो 8 कुलों का संघ था, जिसमें विदेह, ज्ञातृक, लिच्छवी व वज्जि महत्वपूर्ण थे।
- वज्जि संघ की राजधानी वैशाली थी।
- महावीर की माता त्रिशला लिच्छवी राज्य के प्रमुख चेटक की बहन थी, जबकि महावीर के पिता सिद्धार्थ ज्ञातृक कुल के प्रमुख थे।
- वैशाली (वज्जि संघ) की प्रसिद्ध नर्तकी आम्रपाली को वैशाली की नगरवधू घोषित किया गया था।
- बौद्ध संघ में प्रवेश के आग्रह के पश्चात् महात्मा बुद्ध ने आम्रपाली को अपने संघ में भिक्षुणी के रूप में प्रवेश दिया और उसे 'आर्या अम्बा' कहकर संबोधित किया।
- कौटिल्य ने लिच्छवी राज्य का उल्लेख 'राजशब्दोपजीवी संघ' के रूप में किया है।
- बौद्ध संघ में प्रवेश करने वाली पहली महिला बुद्ध की विमाता/मौसी प्रजापति गौतमी थी। आम्रपाली बौद्ध संघ में प्रवेश पाने वाली दूसरी महिला थी।

लिच्छवि गणराज्य

- लिच्छवियों द्वारा विश्व का प्रथम गणराज्य वैशाली में स्थापित किया गया था।
- राजा इक्ष्वाकु के पुत्र विशाल ने लिच्छवि वंश की स्थापना की थी, जो कालान्तर में वैशाली के नाम से विख्यात हुआ। वैशाली राजवंश में कुल 24 राजा हुए। इस राजवंश का प्रथम शासक नमनेदिष्ट था जबकि अंतिम राजा 'सुति या प्रमाति' था।
- 7वीं सदी ईसा पूर्व में वैशाली का लिच्छवि राज्य, राजतंत्र से गणतंत्र में परिवर्तित हो गया।
- मगध नरेश बिम्बिसार का विवाह वज्जि संघ के प्रधान राजा चेटक की पुत्री चेलना से हुआ था।

प्राचीन बिहार में धर्म सुधार आन्दोलन

- **ईसा पूर्व छठी शताब्दी** के आस-पास नई चिन्तन धाराओं ने जन्म लिया जिसे इतिहास में **धार्मिक सुधार आन्दोलन** के नाम से जाना जाता है।
- उत्तर वैदिक काल **कर्मकाण्डीय जटिलताओं** और **जातीय विषमताओं** के साथ-साथ अनेक सामाजिक बुराइयों से भी ग्रसित हो चुका था, जिससे लोग त्रस्त थे।
- **बौद्ध** और **जैन धर्म** ने जब शांति और सामाजिक समरसता का प्रचार किया तो लोगों ने खुले दिल से स्वागत किया।
- बुद्ध और महावीर दोनों लगभग समकालीन थे और दोनों ने ही इस बात पर बल दिया कि वास्तविक सुख भौतिक समृद्धि या धार्मिक अनुष्ठानों से नहीं बल्कि दया, दान, मितव्ययिता जैसे मानवीय सरोकार वाले अच्छे सामाजिक कर्मों से मिलता है।

बौद्ध धर्म

- ब्राह्मणों के रूढ़िवादी धर्म के विरूद्ध बौद्ध धर्म ने आर्थिक और सामाजिक समानता पर आधारित एक सुधारवादी विचारधारा को जन्म दिया।
- बौद्ध धर्म के प्रवर्तक गौतम बुद्ध (सिद्धार्थ) थे। गौतम बुद्ध का जन्म 563 ई.पू. में वैशाख पूर्णिमा के दिन कपिलवस्तु के लुम्बिनी (अब नेपाल) में शाक्य कुल में हुआ था।
- गौतम बुद्ध के पिता का नाम शुद्धोधन (शाक्य गण के प्रधान) और माता का नाम महामाया (कोलिय वंश) था।
- जन्म के कुछ समय बाद महामाया का देहान्त हो गया, बुद्ध का पालन-पोषण उनकी मौसी/विमाता प्रजापति गौतमी ने किया।
- गौतम बुद्ध का विवाह 16 वर्ष की आयु में शाक्य कुल की कन्या यशोधरा के साथ हुआ था। विवाह के 12 वर्ष बाद पुत्र राहुल का जन्म हुआ। 29 वर्ष की आयु में राजकुमार सिद्धार्थ मध्य रात्रि के समय अपने पुत्र और पत्नी को सोता छोड़, घोड़े कंथक और सारथी छन्दक के साथ गृह त्याग दिया।
- गृहत्याग के पश्चात् गौतम बुद्ध, अलार कलाम से सांख्य दर्शन की शिक्षा ग्रहण की, तत्पश्चात् वह राजगृह में रूद्रक रामपुत्र से मिले।
- ज्ञान की खोज में गौतम बुद्ध राजगृह से ऊरूवेला (बोध गया) पहुँचे।
- ऊरूवेला वन में, 6 वर्ष की कठिन तपस्या के बाद, 35 वर्ष की आयु में, वैशाख पूर्णिमा के दिन, फल्गू नदी (निरंजना नदी) के किनारे पीपल वृक्ष के नीचे सिद्धार्थ को ज्ञान प्राप्त हुआ।
- विपश्यना मुद्रा को बुद्ध ने ज्ञान/ध्यान साधन में अपनाया था।
- ज्ञान प्राप्ति के बाद सिद्धार्थ को बुद्ध नाम से जाना गया। ज्ञान साधना वाले पीपल वृक्ष को बोधिवृक्ष और उस स्थान को बोधगया कहा गया। बुद्ध के अन्य नाम तथागत एवं शाक्यमुनि भी हैं।
- बुद्ध ने ज्ञान प्राप्ति के बाद सर्वप्रथम सारनाथ (ऋषिपत्तन) में अपने पाँच शिष्यों अश्वजीत, कौण्डिन्य, महानामा, भद्दिय और वप्पा को दीक्षित किया। यह घटना धर्मचक्रप्रवर्तन के नाम से जानी जाती है।
- कोशल की राजधानी श्रावस्ती में बुद्ध ने अपने जीवन के सर्वाधिक उपदेश दिए।
- राजगृह को कुशाग्रपुर भी कहा जाता था। राजगृह पाँच पहाड़ियों गिच्झकूट, वेभार, पण्डव, वेपुल्ल एवं इसिगिलि से घिरा होने के कारण गिरिव्रज के नाम से जाना जाता था। राजगृह (रत्नगिरि) बुद्ध का प्रिय निवास था।
- बौद्ध धर्म अनात्मवादी है अर्थात् इसमें आत्मा की परिकल्पना नहीं की गई है, किन्तु यह पुनर्जन्म में विश्वास करता है, जबकि जाति प्रथा व वर्ण व्यवस्था का विरोध करता है।
- **बुद्ध ने चार आर्य सत्य बताएँ-**
  - (i) दुःख (संसार दुःखमय है)
  - (ii) दुःख समुदाय (दुःख का कारण है)
  - (iii) दुःख निरोध (दुःखों का निवारण संभव है)
  - (iv) दुःख निरोधगामिनी प्रतिपदा (दुःखों के निवारण हेतु अष्टांगिक मार्ग आवश्यक है)
- बुद्ध धर्म के विषय में जानकारी पाली भाषा में रचित त्रिपिटक से प्राप्त होती है।
  - → विनय पिटक (उपालि द्वारा संकलित) यह संघ सम्बन्धी नियम तथा दैनिक जीवन सम्बन्धी आचार-विचार का संग्रह है।
  - → सुत्त पिटक (आनंद द्वारा संकलित) इसमें बौद्ध धर्म के सिद्धांत एवं उपदेश संग्रहित है।
  - → अभिधम्म पिटक (मोग्गालिपुत्त तिस्स द्वारा संकलित) इसमें दार्शनिक सिद्धांतों का संग्रह है।
- बौद्ध धर्म के उपदेश पालि भाषा में दिए गए है।
- बौद्ध धर्म में त्रिरत्न हैं- बुद्ध, धम्म एवं संघ।
- गौतम बुद्ध की 80 वर्ष की आयु में वैशाख पूर्णिमा के दिन 483 ई. पू. में कुशीनारा में मृत्यु (महापरिनिर्वाण) हो गई।
- बुद्ध के जन्म एवं मृत्यु की तिथि चीनी परंपरा के कैंटीन अभिलेख के आधार पर निर्धारित की गई है।
- महापरिनिर्वाण सुत्त में बुद्ध के शरीर धातु के आठ दावेदार हुए- (1) मगध नरेश अजातशत्रु (2) वैशाली के लिच्छवी (3) पावा के मल्ल (4) कपिलवस्तु के शाक्य (5) रामगाम के कोलिय (6) अलकप्प के बुलि (7) पिप्पलिवन के मोरिय तथा (8) बेठद्वीप के ब्राह्मण
- बौद्धों के लिए महीने के चार दिन अमावस्या, पूर्णिमा और दो चतुर्थी दिवस उपवास के होते थे।
- संघ में प्रविष्ट होने को उपसम्पदा कहा जाता था।

बौद्ध धर्म के प्रतीक		
	घटना	**चिह्न/प्रतीक**
♦	जन्म	कमल व साँड़
♦	गृह त्याग	घोड़ा
♦	ज्ञान	पीपल (बोधिवृक्ष)
♦	निर्वाण	पद चिह्न
♦	मृत्यु (महापरिनिर्वाण)	स्तूप
बुद्ध से संबंधित महत्वपूर्ण घटनाएं एवं उनके प्रतीक		
♦	हाथी	माता के गर्भ में आना
♦	कमल	बुद्ध का जन्म
♦	घोड़ा	गृह त्याग (महाभिनिष्क्रमण)

♦	बोधिवृक्ष	ज्ञान प्राप्ति (निर्वाण)
♦	धर्मचक्र	प्रथम उपदेश (धर्मचक्रप्रवर्तन)
♦	भूमिस्पर्श	इंद्रियों पर विजय

बुद्ध कालीन गणराज्य

1.	कपिलवस्तु	शाक्य
2.	सुमसुमार गिरि	भग्ग
3.	केसपुत्र	कालाम
4.	रामग्राम	कोलिय
5.	कुशीनारा	मल्ल
6.	पावा	मल्ल
7.	पिप्पलिवन	मोरिय
8.	अल्लकप्प	बुलि
9.	वैशाली	लिच्छवि
10.	मिथिला	विदेह

बौद्ध धर्म के परवर्ती धार्मिक संप्रदाय

	संप्रदाय	**संस्थापक**
♦	आजीवक	मक्खलिपुत्र गोशाल
♦	घोर अक्रियावादी	पूरन कश्यप
♦	उच्छेदवादी	अजित केस कम्बलिन
♦	संदेहवादी	संजय वेलट्ठिपुत्र
♦	नित्यवादी	पकुधकच्चायन

बौद्धधर्म के आष्टांगिक मार्ग

1.	सम्यक् दृष्टि	वास्तविक स्वरूप का ज्ञान
2.	सम्यक् संकल्प	लोभ, द्वेष, हिंसा मुक्त विचार
3.	सम्यक् वाक्	अप्रिय वचन न बोलना
4.	सम्यक् कर्मांत	उचित एवं सद्कर्म करना
5.	सम्यक् आजीव	सदाचारयुक्त आजीविका
6.	सम्यक् व्यायाम	शारीरिक/मानसिक व्यायाम
7.	सम्यक् स्मृति	सात्विक भाव
8.	सम्यक् समाधि	एकाग्रता

बौद्ध संगीतियाँ

प्रथम

स्थान	राजगृह (सप्तपर्णी गुफा)
समय	483 ई.पू.
अध्यक्ष	पूरण महाकस्सप
शासनकाल	अजातशत्रु (हर्यंक वंश)
विशेष	बुद्ध के उपदेशों को दो पिटकों- सुत्त पिटक तथा विनय पिटक में संकलित करना

द्वितीय

स्थान	वैशाली
समय	383 ई.पू.
अध्यक्ष	सब्बकामी (सर्वकामी)
शासनकाल	कालाशोक (शिशुनाग वंश)
विशेष	बौद्ध धर्म का स्थविर एवं महासांघिक दो भागों में विभाजन

तृतीय

स्थान	पाटलिपुत्र
समय	247 ई.पू.
अध्यक्ष	मोग्गलिपुत्त तिस्स
शासनकाल	अशोक (मौर्यवंश)
विशेष	संघ भेद के विरुद्ध कठोर नियमों का प्रतिपादन एवं तीसरा पिटक अभिधम्म पिटक जोड़ना

चतुर्थ (बिहार से बाहर)

स्थान	कश्मीर के कुण्डलवन
समय	लगभग ईसा की प्रथम शताब्दी
अध्यक्ष	वसुमित्र एवं अश्वघोष (उपाध्यक्ष)
शासनकाल	कनिष्क (कुषाण वंश)
विशेष	बौद्ध धर्म का दो सम्प्रदायों हीनयान तथा महायान में विभाजन

जैन धर्म

- जैन धर्म के संस्थापकों को तीर्थंकर जबकि जैन महात्माओं को निर्ग्रंथ कहा गया है।
- जैन धर्म में कुल 24 तीर्थंकर हुए। प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव को तथा अंतिम (24वाँ) तीर्थंकर महावीर को माना जाता है।
- 23वें तीर्थंकर पार्श्वनाथ थे इनके पिता अश्वसेन काशी के राजा थे। पार्श्वनाथ ने अपने अनुयायियों को चार शिक्षाओं- सत्य, अहिंसा, अस्तेय एवं अपरिग्रह का पालन करने को कहा था। महावीर स्वामी ने इसमें पाँचवे व्रत 'ब्रह्मचर्य' को जोड़ा था।
- ऋषभदेव और अरिष्टनेमि का उल्लेख ऋग्वेद में मिलता है।
- महावीर स्वामी का जन्म 599 ई.पू. में वैशाली के कुण्डग्राम (कुण्डलपुर) में हुआ था।
- इनके पिता सिद्धार्थ ज्ञातृक क्षत्रिय कुल के प्रधान, माता त्रिशला (विदेहदत्ता) वैशाली के लिच्छवी गणराज्य के प्रमुख चेटक की बहन, पत्नी यशोदा कुंडिण्य गोत्र की कन्या तथा पुत्री प्रियदर्शना (अणोज्जा) थी।
- जमालि, महावीर स्वामी का दामाद और प्रथम शिष्य था।
- 12 वर्ष की कठोर तपस्या व साधना के पश्चात् महावीर स्वामी को जृम्भिका ग्राम के समीप ऋजुपालिका नदी (किउल नदी) के तट पर एक साल वृक्ष के नीचे कैवल्य (पूर्ण ज्ञान) प्राप्त हुआ। ज्ञान प्राप्ति के पश्चात् वे केवलिन, अर्हंत (योग्य), जिन (विजेता) तथा निर्ग्रंथ (बंधन रहित) कहलाए।
- महावीर स्वामी ने अपना पहला उपदेश राजगीर के विपुलगिरि नामक स्थान पर दिया। चन्दना पहली जैन भिक्षुणी थी जो चम्पा नरेश दधिबाहन की पुत्री थी।
- महावीर स्वामी ने अपने जीवन काल में एक संघ की स्थापना की जिसमें 11 प्रमुख अनुयायी शामिल थे। ये गणघर कहलाएँ। सुधर्मन के अलावा महावीर के जीवन काल में ही 10 गणघरों की मृत्यु हो गयी।
- लगभग 72 वर्ष की आयु में 527 ई.पू. में राजगीर के समीप स्थित पावापुरी नामक स्थान पर महावीर स्वामी ने शरीर त्याग दिया।
- कालांतर में जैन धर्म दो सम्प्रदायों- श्वेताम्बर और दिगम्बर में विभक्त हो गया। स्थूलभद्र के अनुयायी श्वेताम्बर और भद्रबाहु के अनुयायी दिगंबर कहलाए।

● सर्वप्रथम महावीर एवं अन्य तीर्थंकरों की पूजा श्वेताम्बर संप्रदाय के लोगों ने ही आरम्भ की।

जैन तीर्थंकर एवं उनके प्रतीक चिह्न		
	तीर्थंकर	**प्रतीक चिह्न**
1.	ऋषभदेव/आदिनाथ	वृषभ
2.	अजितनाथ	हाथी/गज
3.	संभवनाथ	अश्व
4.	अभिनंदन	बन्दर/वानर
5.	सुमतिनाथ	क्रौंच पक्षी
6.	पद्म प्रभु	कमल/पद्म
7.	सुपार्श्वनाथ	स्वास्तिक
8.	चन्द्रप्रभु	अर्द्धचन्द्र
9.	पुष्पदत्त/सुविछिनाथ	मकर
10.	शीतलनाथ	कल्पवृक्ष
11.	श्रेयांसनाथ	खड्ग/गैंडा
12.	वासुपूज्य	भैंसा
13.	विमलनाथ	वाराह
14.	अनंतनाथ	सेही/बाज
15.	धर्मनाथ	वज्रदंड
16.	शान्तिनाथ	हरिण/हिरन
17.	कुंथनाथ	बकरा
18.	अर्हनाथ	मत्स्य
19.	मल्लिनाथ	कलश
20.	मुनि सुव्रत	कूर्म/कछुआ
21.	नमिनाथ	नीला कमल
22.	अरिष्टनेमि/ नेमीनाथ	शंख
23.	पार्श्वनाथ	सर्प
24.	महावीर	सिंह

प्रमुख जैन तीर्थंकर एवं उनके प्रतीक	
तीर्थंकर	**प्रतीक**
ऋषभदेव (प्रथम)	वृषभ
अजितनाथ (द्वितीय)	हाथी
सम्भवनाथ (तृतीय)	घोड़ा
शांतिनाथ (सोलहवें)	हिरण
अरिष्टनेमि (बाईसवें)	शंख
पार्श्वनाथ (तेईसवें)	सर्पफण
महावीर स्वामी (चौबीसवें)	सिंह

जैन संगीतियां		
	प्रथम	**द्वितीय**
वर्ष	310 ईसा पूर्व	512 ई.
स्थान	पाटलिपुत्र (बिहार)	वल्लभी (गुजरात)
अध्यक्ष	स्थूल भद्र	देवर्धि क्षमाश्रमण
परिणाम	12 अंगों का संकलन, जैन धर्म का दो संप्रदायों श्वेताम्बर एवं दिगंबर में विभाजन	धर्मग्रंथों का अंतिम संकलन एवं लिपिबद्ध।

पंच महाव्रत/अणुव्रत	
अहिंसा	जीवों की हत्या न करना
सत्य	सदा सत्य बोलना
अपरिग्रह	संपत्ति का संग्रह न करना
अस्तेय	चोरी न करना
ब्रह्मचर्य	इन्द्रियों पर नियंत्रण
त्रिरत्न	
सम्यक् दर्शन	वास्तविक ज्ञान
सम्यक् ज्ञान	सत्य में विश्वास
सम्यक् आचरण	सुख-दुःख के प्रति समभाव

बौद्ध धर्म और जैन धर्म में समानता

1. अहिंसा और शांति दोनों ही धर्मों का मूल था।
2. दोनों का उदय यज्ञीय कर्मकांड, ब्राह्मणवाद, जातिप्रथा और छुआछूत के विरोध में हुआ।
3. दोनों ही ईश्वर की सत्ता में विश्वास नहीं करते।
4. दोनों ने ही पुनर्जन्म के सिद्धांत को स्वीकार किया है।
5. इन दोनों ही धर्मों ने अपने विचारों के प्रचार के लिए जनता की सरल भाषा का प्रयोग किया।

बौद्ध धर्म तथा जैन धर्म में असमानताएं		
	बौद्ध धर्म	**जैन धर्म**
1.	बौद्ध के उपदेश की भाषा पालि थी	महावीर के उपदेश की भाषा प्राकृत थी
2.	विदेशों में प्रसार अधिक हुआ, भारत में नहीं	प्रसार भारत में ही हुआ विदेशों में कहीं नहीं
3.	संघ एवं भिक्षुओं पर आधारित था	अनुयायियों पर आधारित था
4.	ईश्वर एवं आत्मा के अस्तित्व को नकारते हैं	आत्मा को शाश्वत् मानते हैं
5.	न अधिक सुख एवं न अधिक दुःख अर्थात् मध्यम मार्ग के समर्थक	कठोर व्रत पालन एवं उदासीन शारीरिक दुःख के समर्थक
6.	बौद्ध धर्म मोक्ष को मध्यम मार्ग के रूप में स्वीकार करता है	जैन धर्म मोक्ष की सिद्धावस्था में शरीर का त्याग मानता है
7.	बौद्ध धर्म में नग्न मूर्तियों की पूजा नहीं होती	इस धर्म के अनुयायी महावीर की नग्न मूर्तियों के उपासक हैं
8.	अहिंसा का नियम व्यावहारिक था	अहिंसा का नियम कठोरतम था
9.	अष्टांगिक मार्ग से गृहस्थ भी निर्वाण प्राप्त कर सकते हैं	जैन धर्म के अनुसार गृहस्थ के लिए निर्वाण प्राप्त करना असम्भव था

मगध साम्राज्य

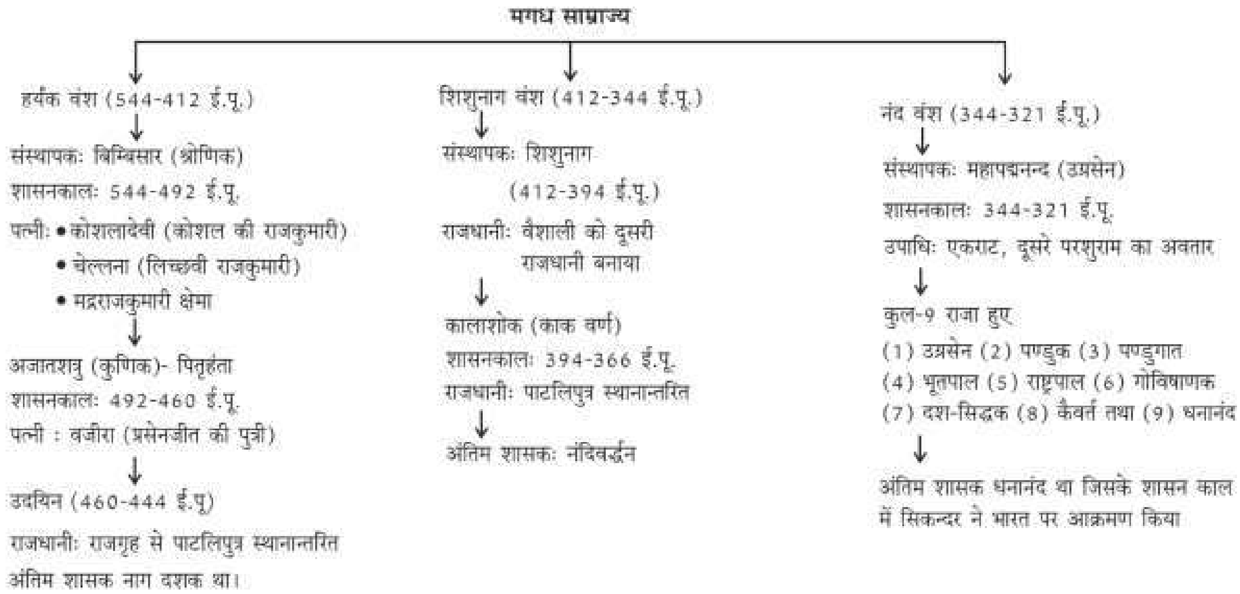

- मगध राज्य के प्रारंभिक इतिहास का उल्लेख महाभारत में मिलता है। इसमें मगध के शासक जरासंध का उल्लेख है, जिसे भीम ने द्वन्द्व-युद्ध में परास्त किया था।
- महाभारत में गंगा के उत्तर में विदेह राज्य और दक्षिण में मगध राज्य का उल्लेख किया गया है।
- मगध प्राचीनकाल से ही राजनीतिक उठापटक के साथ धार्मिक एवं सामाजिक जागृति का केन्द्र बिन्दु रहा है।
- मगध बुद्ध काल में शक्तिशाली राजतंत्रों में एक था जो आज के दक्षिणी बिहार में स्थित था।
- कालांतर में यह उत्तर भारत का सर्वाधिक शक्तिशाली महाजनपद बन गया।
- मगध महाजनपद की सीमा उत्तर में गंगा से दक्षिण में विन्ध्य पर्वत तक थी पूर्व में चम्पा तथा पश्चिम में सोन नदी तक विस्तृत थी।
- मगध की प्राचीन राजधानी राजगृह थी जो पांच पहाड़ियों से घिरा नगर था।
- कालांतर में मगध की राजधानी पाटलिपुत्र में स्थापित हुई।
- मगध ने तत्कालीन शक्तिशाली राज्य कोशल, वत्स व अवंती को अपने साम्राज्य में मिला लिया।
- एक समय मगध का विस्तार अखण्ड भारत के रूप में हो गया और प्राचीन मगध का इतिहास ही भारत का इतिहास बन गया।
- मगध साम्राज्य का उत्कर्ष करने में कई राजवंशों का महत्वपूर्ण स्थान रहा है।

प्रमुख शासक एवं राजवंश

राजवंश	शासक
• हर्यक वंश	बिम्बिसार, अजातशत्रु, उदयिन/उदयभद्र, अनिरुद्ध, मुण्ड/मंडक, नागदशक
• शिशुनाग वंश	शिशुनाग, कालाशोक, नन्दिवर्धन
• नंद वंश	महापद्मनंद, पण्डुक, पाण्डुगति, भूतपाल, राष्ट्रपाल, गोविषाणक, दशसिद्धक, कैवर्त्त एवं धनानन्द

वृहद्रथ वंश

- महाभारत के अनुसार चेदि के राजा वस्सु के पुत्र वृहद्रथ ने वृहद्रथ वंश की स्थापना की।
- जरासंघ ने इस वंश की राजधानी राजगृह को बनाई।
- इस वंश का अंतिम राजा रिपुञ्जय था।

हर्यंक वंश

- वृहद्रथ वंश के अंतिम शासक रिपुञ्जय की हत्या कर बिम्बिसार ने हर्यंक वंश की स्थापना किया।

बिम्बिसार

- बिम्बिसार का उल्लेख बौद्ध और जैन साहित्य दोनों में हुआ है।
- बिम्बिसार कालीन मगध का उल्लेख अंगुतर निकाय और अथर्ववेद में हुआ है।
- जातक के अनुसार बिम्बिसार बुद्ध से मिलने 12 नयुत (1 लाख 20 हजार) प्रजाजनों के साथ लट्ठिवन राजगृह के उद्यान गया था।
- बिम्बिसार सपरिवार बौद्ध धर्म का अनुयायी बना और बौद्ध धर्म को मगध का राजधर्म घोषित किया।
- बिम्बिसार अपने राजवैध जीवक को बौद्ध भिक्षुओं की स्वास्थ्य सेवा हेतु गौतम बुद्ध के साथ लगा दिया।
- बिम्बिसार ने कोशल नरेश प्रसेनजीत की बहन कोशला, लिच्छवी नरेश चेटक की पुत्री चेल्लना और आधुनिक पंजाब के मद्र राज्य की राजकुमारी क्षेमा के साथ विवाह किया। कोशल नरेश ने बिम्बिसार को दहेज में कसिया ग्राम (आधुनिक काशी) दिया।
- वैवाहिक सम्बन्धों के माध्यम से बिम्बिसार अपनी पश्चिमी और उत्तरी सीमा सुरक्षित कर लिया तदोपरान्त उसने अपने पूर्वी पड़ोसी राज्य अंग पर चढ़ाई कर वहाँ के शासक ब्रह्मदत्त का वध कर दिया।

- बिम्बिसार ने अपनी राजधानी राजगृह में स्थापित की।
- बिम्बिसार ने अपने राजवैध जीवक को अवन्ती के राजा चण्डप्रद्योत की चिकित्सा हेतु उज्जैन भेजा था।
- बिम्बिसार भारतीय इतिहास का पहला शासक था जिसने स्थायी सेना रखी। साथ ही अपनी सेना में सबसे पहले हाथियों का प्रयोग किया था।
- बिम्बिसार ने अपने ज्येष्ठ पुत्र दर्शक को अपना उत्तराधिकारी घोषित किया परन्तु उसके कनिष्ठपुत्र अजातशत्रु ने सिंहासन पर अधिकार करने के लिए अपने पिता को बंदी बना लिया। बौद्ध स्रोतों में अजातशत्रु को 'पितृहंता' कहा गया है।

अजातशत्रु

- अजातशत्रु ने अपने पिता बिम्बिसार की साम्राज्यवादी नीति को आगे बढ़ाया। अजातशत्रु का पहला युद्ध कोशल के राजा प्रसेनजीत के साथ हुआ। प्रसेनजीत ने काशी पर पुनः अधिकार कर लिया।
- अजातशत्रु ने प्रसेनजीत को पराजित कर संधि किया, फलस्वरूप काशी, पुनः मगध को प्राप्त हुआ। प्रसेनजीत ने अपनी पुत्री वजीरा का विवाह अजातशत्रु से कर दिया।
- अजातशत्रु का दूसरा युद्ध वज्जि गणराज्य के साथ हुआ। बौद्ध ग्रंथ सुमंगल विलासिनी के अनुसार यह युद्ध गंगा के किनारे रत्नों की खान पर अधिकार स्थापित करने के लिए हुआ था। भगवति सूत्र के अनुसार अपने मंत्री वस्सकार की सहायता से अजातशत्रु ने वज्जि संघ के सदस्यों में फूट डाल दी। इस युद्ध में अजातशत्रु ने महा-शिलाकण्टक तथा रथमुसल नामक अस्त्रों का प्रयोग किया था, तत्पश्चात् अजातशत्रु ने वैशाली को जीत लिया।
- अजातशत्रु ने गंगा और सोन नदियों के संगम पर वैशाली पर अभियान के लिए सैनिक छावनी का निर्माण किया। यह क्षेत्र पाटलिग्राम कहलाया, जो बाद में पाटलिपुत्र के नाम से विख्यात हुआ।
- अवंती के राजा चण्डप्रद्योत द्वारा मगध पर आक्रमण करने की संभावना के मद्देनजर अजातशुत्र ने राजगीर की सुरक्षा हेतु किलेबंदी कराई।
- बुद्ध के अवशेषों पर राजगृह में अजातशुत्र ने एक स्तूप का निर्माण करवाया।

उदयिन-

- उदयिन या उदयभद्र, अजातशत्रु का उत्तराधिकारी था।
- बौद्ध ग्रन्थों में उदयिन को पितृहंता और जैन ग्रन्थों में इसे पितृभक्त कहा गया है।।
- उदयिन अपनी राजधानी राजगृह से पाटलिपुत्र स्थानान्तरित किया।
- उदयिन को पाटलिपुत्त नगर बसाने व निर्माण का श्रेय दिया जाता है।
- नागदाशक इस वंश का अंतिम शासक था।

शिशुनाग वंश

- काशी के तत्कालीन अमात्य व सेनापति शिशुनाग ने शिशुनाग वंश की स्थापना की।
- शिशुनाग ने अवन्ती, वत्स तथा कोशल राज्य पर विजय प्राप्त कर मगध साम्राज्य में विलय कर लिया।
- शिशुनाग ने मगध की राजधानी वैशाली में स्थापित किया।
- शिशुनाग का पुत्र कालाशोक था। कालाशोक पाटलिपुत्र को मगध की स्थायी राजधानी बना दिया।
- कालाशोक के शासन काल में वैशाली में द्वितीय बौद्ध संगीति आयोजित की गयी।
- इस वंश का अंतिम शासक नंदीवर्धन था।

नन्द वंश

- नन्द वंश का संस्थापक महापद्मनंद था। महाबोधिवंश में महापद्मनंद को उग्रसेन कहा गया है।
- महापद्मनंद ने 'एकराट' की उपाधि धारण की थी, पुराणों में उसे 'सर्वक्षत्रांतक' और 'अपरोपरशुराम' कहा गया है।
- महापद्मनंद ने कलिंग को विजित कर वहाँ से जिनसेन की मूर्ति उठा लाया।
- हाथी गुम्फा अभिलेख के अनुसार कलिंग में महापद्मनंद द्वारा एक नहर निर्मित कराए जाने का उल्लेख प्राप्त होता है।
- बौद्ध ग्रंथ महाबोधिवंश में नौ नंद वंशीय शासकों का उल्लेख है। धनानन्द अंतिम नन्द शासक था।

मौर्य साम्राज्य (321-185 ई.पू.)

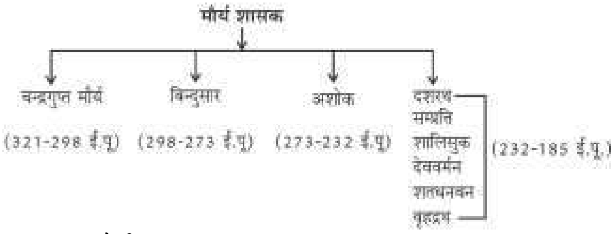

चन्द्रगुप्त मौर्य

- चन्द्रगुप्त मौर्य ने चाणक्य (विष्णुगुप्त या कौटिल्य) की सहायता से नन्द वंश के अंतिम शासक धनानन्द को पराजित कर, मौर्य वंश की स्थापना की।
- चाणक्य, चन्द्रगुप्त मौर्य का प्रधानमंत्री तथा प्रधान पुरोहित था। चाणक्य ने राजशासन के ऊपर प्रसिद्ध ग्रन्थ अर्थशास्त्र की रचना की।
- चन्द्रगुप्त मौर्य और सिकन्दर के साम्राज्य के पूर्वी भाग के शासक सेल्युकस की सेना के मध्य 305 ई.पू. में एक युद्ध हुआ।
- 315 ई.पू में सेल्युकस ने मेगस्थनीज को चन्द्रगुप्त मौर्य के दरबार में भेजा तथा अपनी पुत्री हेलना का विवाह चन्द्रगुप्त मौर्य से किया।
- मेगस्थनीज ने इण्डिका नामक ग्रन्थ लिखा, जो वर्तमान में मूल स्वरूप में उपलब्ध नहीं है।
- मेगस्थनीज की इण्डिका के अनुसार, भारत में अकाल नहीं पड़ता था, लेखन कला का अभाव था, दास प्रथा नहीं थी, सोना निकालने वाली चीटियों का जिक्र किया, मौर्य सम्राट का नाम सैड्रोकोटस तथा मौर्य साम्राज्य की राजधानी पोलिब्रोथा थी।
- मेगस्थनीज के अनुसार नगर और सैनिक प्रशासन की देख रेख हेतु पाँच-पाँच लोगों की 6 समित्तियाँ थी।
- पटना के समीप कुम्हरार नामक स्थान से चन्द्रगुप्त मौर्य के राजप्रसाद के अवशेष प्राप्त हुए हैं। इसे खोजने का श्रेय स्पूनर को प्राप्त है।

- चन्दगुप्त मौर्य, जैन भिक्षु भद्रवाहु का शिष्यत्व ग्रहण कर, उसके साथ श्रवणबेलगोला चला गया।
- 298 ई.पू. में चन्द्रगुप्त मौर्य ने श्रवणबेलगोला में संल्लेखना द्वारा शरीर त्याग दिया।

बिन्दुसार

- बिन्दुसार, चन्द्रगुप्त मौर्य का पुत्र व उत्तराधिकारी था।
- यूनानी लेखकों ने बिन्दुसार को अमित्रोकेडीज (अमित्रघात) कहा है।
- दिव्यावदान के अनुसार, बिन्दुसार के समय तक्षशिला में दो बार विद्रोह हुआ। उसने प्रथम विद्रोह के दमन के लिए अशोक को तथा दूसरे विद्रोह के दमन के लिए सुसीम को भेजा था।
- पिंगलवत्स नामक भविष्यवक्ता, बिन्दुसार के दरबार में रहता था।
- बिन्दुसार ने सीरिया के शासक एंटियोकस से तीन वस्तुओं (1) मीठी मदिरा (2) सूखी अंजीर और (3) एक दार्शनिक की माँग की थी।
- एंटियोकस ने दार्शनिक को छोड़कर शेष वस्तुएं बिन्दुसार के दरबार में भेज दी थी।

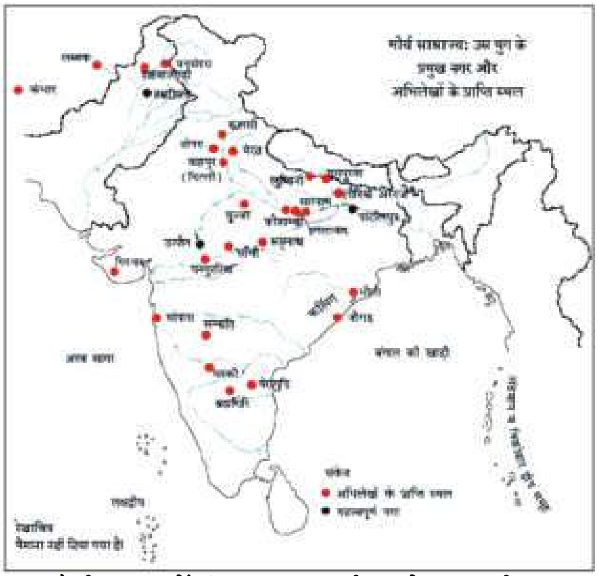

मौर्य काल में बिहार (321 ई.पू. से 185 ई.पू.)

मेगास्थनीज की इंडिका में वर्णित जातियाँ

- दार्शनिक
- कृषक
- पशुपालक
- व्यापारी तथा श्रमजीवी कारीगर एवं शिल्पी
- योद्धा
- निरीक्षक अथवा गुप्तचर
- सभासद

बिन्दुसार को प्राप्त उपाधि

ग्रंथ	उपाधि
• यूनानी लेखों में	अमित्रोकेडीज
• संस्कृत ग्रन्थ में	अमित्रघात
• वायुपुराण में	भद्रसार/मद्रसार
• जैन ग्रन्थ में	सिंहसेन

कौटिल्य का सप्तांग सिद्धांत

1. राजा या स्वामी	कौटिल्य ने राजा को राज्य का केन्द्र व अभिन्न अंग माना है तथा उन्होंने राजा की तुलना शीर्ष (सर्वोपरि) से की है। उसका मानना है कि राजा को दूरदर्शी, आत्मसयंमी, कुलीन, स्वस्थ तथा बौद्धिक गुणों से संपन्न होना चाहिए। वह राजा को कल्याणकारी तथा जनता के प्रति उत्तरदायी होने की सलाह देता है, क्योंकि उसके अनुसार राजा कर्तव्यों से बंधा होता है। कौटिल्य के अनुसार राजा को सर्वोपरि होने के बावजूद भी उसे निरंकुश शक्तियाँ नहीं देना चाहिए।
2. अमात्य या मंत्री	कौटिल्य ने अमात्य और मंत्री दोनों की तुलना 'आंख' से की है। अमात्य उसी व्यक्ति को चुना जाना चाहिए जो अपनी जिम्मेदारियों को संभाल सके तथा राजा के कार्यों में उसके सहयोगी की भूमिका निभा सके।
3. जनपद	कौटिल्य ने इसकी तुलना 'पैर' से की है। जनपद का अर्थ है 'जनयुक्त भूमि' अर्थात् जनसंख्या तथा भूभाग दोनों को जनपद माना है। कौटिल्य ने दस गाँवों के समूह में 'संग्रहण' दो सौ गाँवों के समूह के बीच 'सार्वत्रिक' चार सौ गाँवों के समूह के बीच एक 'द्रोणमुख' तथा आठ सौ गाँवों में एक 'स्थानीय' अधिकारी की नियुक्ति की बात कही है।
4. दुर्ग	कौटिल्य ने दुर्ग की तुलना 'बांहों' या 'भुजाओं' से की है। कौटिल्य ने चार प्रकार के दुर्गो की चर्चा की हैः- 1. औदक दुर्ग-जिसके चारों ओर पानी हो। 2. पार्वत दुर्ग-जिसके चारों ओर चट्टाने हो। 3. धान्वन दुर्ग-जिसके चारों ओर ऊसर भूमि हो। 4. वन दुर्ग-जिसके चारों ओर वन तथा जंगल हो।
5. कोष	इसकी तुलना कौटिल्य ने 'मुख' से की है। उन्होंने कोष को राज्य का मुख्य अंग इसलिए माना है क्योंकि कोष से ही कोई राज्य वृद्धि करता है तथा शक्तिशाली बने रहने के लिए कोष के द्वारा ही अपनी सेना का भरण-पोषण

	करता है। उसने कोष में वृद्धि का मार्ग करारोपण को बताया हैं जिसमें प्रजा को अनाज का छठा भाग, व्यापार का दसवां भाग तथा पशुधन के लाभ का पचासवां भाग राजा को कर के रूप में अदा करना चाहिए।
6. दंड या सेना	कौटिल्य ने सेना की तुलना 'मस्तिष्क' से की है। कौटिल्य ने सेना के चार प्रकार बताए हैं–हस्ति सेना, अश्व सेना, रथ सेना तथा पैदल सेना। उनके अनुसार सेना ऐसी होनी चाहिए जो साहसी हो, बलशाली हो तथा जिसके हर सैनिक के हृदय में देशप्रेम हो तथा वीरगति को प्राप्त हो जाने पर जिसके परिवार को उस पर अभिमान हो।
7. मित्र	मित्र को कौटिल्य ने 'कान' कहा है। उसके अनुसार राज्य की उन्नति के लिए तथा विपत्ति के समय सहायता के लिए राज्य को मित्रों की आवश्यकता होती है।

अशोक

- अशोक शासक बनने से पहले तक्षशिला का गवर्नर था।
- अशोक 273 ई.पू. में मगध का शासक बना, परन्तु उसका राज्याभिषेक 269 ई.पू. में हुआ।
- अशोक को अभिलेखों में देवानामपियदसि, देवनामपिय कहा गया है।
- अशोक का व्यक्तिगत नामोल्लेख मास्की, गुर्जरा, नेत्तूर, एवं उडेगोलम के अभिलेखों में मिलता है।
- 261 ई.पू. में अशोक ने कलिंग की विजय की। अशोक के 13वें शिलालेख में इस युद्ध से सम्बन्धित साक्ष्य मिलते हैं।
- अशोक के अधिकांश अभिलेख प्राकृत भाषा एवं ब्राह्मी लिपि में लिखे गए हैं। कई स्थानों पर खरोष्ठी लिपि (पश्चिमोत्तर भारत), ग्रीक लिपि एवं आरमइक लिपि (सीमा प्रांत) का प्रयोग हुआ है।
- अशोक के अभिलेखो को सर्वप्रथम पढ़ने का श्रेय जेम्स प्रिंसेप को हासिल है।

अशोक द्वारा भेजे गए बौद्ध धर्म प्रचारक

धर्म प्रचारक	स्थान
मज्झन्तिक	कश्मीर-गांधार
मज्झिम	हिमालय
सोन व उत्तरा	सुवर्णभूमि
रक्षित	उत्तरी कर्नाटक (बनवासी)
धर्म-रक्षित	अपरांतक
महारक्षित	यवनराष्ट्र
महाधर्म रक्षित	महाराष्ट्र
महादेव	मैसूर (महिषमण्डल)
महेन्द्र एवं संघमित्रा	श्रीलंका

अशोक के स्तम्भ लेख एवं उनमें वर्णित विषय

शिलालेख	वर्णित विषय
प्रथम	अहिंसा पर बल, पशुबलि की निंदा एवं समारोह पर प्रतिबंध का उल्लेख है।
दूसरा	समाज कल्याण हेतु कार्य, मनुष्यों एवं पशुओं के लिए चिकित्सा की व्यवस्था एवं पड़ोसी राज्य चोल, पाण्ड्य, सतियपुत्त और केरलपुत्र (चेर) का वर्णन।
तीसरा	इसमें राजकीय अधिकारियों युक्त, रज्जुक तथा प्रादेशिकों को यह आदेश दिया गया कि वे हर पांचवें वर्ष राज्य के दौरा पर जाएं। ब्राह्मणों, मित्रों, सम्बंधियों तथा श्रमणों से सदा उदारतापूर्ण व्यवहार करें।
चौथा	भेरीघोष (युद्ध) की जगह धम्मघोष (शांति) की घोषणा की गई है। पशु हत्या को बहुत हद तक रोके जाने का दावा है।
पांचवां	शासन के 14वें वर्ष धम्ममाहामात्र नामक अधिकारी की नियुक्ति की चर्चा है।
छठवां	इसमें आत्म-नियंत्रण की शिक्षा दी गई है। अधिकारी को हर समय और कहीं भी सेवाभाव से तत्पर रहना बताया गया है।
सातवां	सभी संप्रदायों के लिए सहिष्णुता का भाव रखने पर बल दिया गया है।
आठवां	अशोक के धर्म (तीर्थ) यात्राओं का उल्लेख। अशोक के बोधगया की यात्रा।
नवां	सच्ची भेंट एवं सच्चे शिष्टाचार का उल्लेख। धम्म में सभी दासों एवं नौकरों के प्रति दयाभाव रखना।
दशम्	इसमें ख्याति एवं गौरव की निंदा की गयी है तथा धम्मकीर्ति की श्रेष्ठता पर बल दिया गया है।
ग्यारहवां	इसमें धर्म के वरदान को सर्वोत्कृष्ट एवं धम्म की व्याख्या की गई है।
बारहवां	सभी प्रकार के विचारों का सम्मान, विभिन्न सम्प्रदायों के बीच समन्वय एवं महिला महामात्रों की नियुक्ति।
तेरहवां	कलिंग युद्ध का वर्णन, युद्ध में एक लाख लोगों के मरने एवं अशोक के हृदय परिवर्तन की बात के साथ ही यवन राजाओं का वर्णन है।
चौदहवां	प्रजा को स्वतंत्र धार्मिक जीवन जीने के लिए प्रेरित करना। इसमें अपने प्रजा के प्रति पितृवत् प्रेमभाव को अपनाने पर बल दिया गया है।

अशोक का 13वाँ शिलालेख-

- कलिंग विजय का वर्णन (261 ई.पू में)
- चोल पाण्ड्य, सतिपुक्त, केरलपुत्त एवं ताम्रपर्णि का उल्लेख
- 5 यवन राजाओं को उल्लेख

13वें शिलालेख में वर्णित पाँच यवन राजा

यवन राजा	देश
टॉलमी फिलाडेल्फस द्वितीय (तुरमय)	मिस्र
एलेक्जेंडर (अलिक सुंदर)	एपिरस

मैगस (मग)	साइरीन
एंटीगोनस गोनाट्स (अंतकिन)	मेसीडोनियाँ
एंटीयोकस द्वितीय (अंतियोक)	सीरिया

अशोक के लघु स्तम्भ लेख

लघु स्तम्भ लेख	स्थान
टोपरा	उत्तर प्रदेश
मेरठ	उत्तर प्रदेश
प्रयाग	उत्तर प्रदेश
लौरिया अरेराज	बिहार (चम्पारण)
लौरिया नंदनगढ़	बिहार (चम्पारण)
रामपुरवा	बिहार (चम्पारण)

दिव्यावदान के अनुसार अशोक के उत्तराधिकारी

1. दशरथ
2. सम्प्रति
3. शालिशूक
4. देववर्मन
5. शतधनुष
6. वृहद्रथ

मौर्य राजधानी

प्रान्त	राजधानी	वर्तमान स्थिति
प्राच्य	पाटलिपुत्र	बिहार, उत्तर प्रदेश, बंगाल
उत्तरापथ	तक्षशिला	पाकिस्तान, अफगानिस्तान, कश्मीर
दक्षिणापथ	सुवर्णगिरि	आंध्र प्रदेश
अवन्ति राष्ट्र	उज्जयिनी	मध्य प्रदेश
कलिंग	तोसली	ओडिशा

मौर्यकालीन नगरीय प्रशासन की समितियां

समिति	विशेष
प्रथम समिति	उद्योग शिल्पों का निरीक्षण
द्वितीय समिति	विदेशियों की देखरेख
तृतीय समिति	जनगणना
चतुर्थ समिति	व्यापार वाणिज्य की व्यवस्था
पंचम समिति	विक्रय की व्यवस्था, निरीक्षण
षष्ठम् समिति	बिक्री कर व्यवस्था

- मौर्यकाल में सबसे उच्च स्तर के अधिकारी को तीर्थ कहा जाता था। अर्थशास्त्र के अनुसार इनकी संख्या 18 तीर्थ थी।

मौर्यकालीन तीर्थ

तीर्थ	सम्बन्धित विभाग
1. पुरोहित व प्रधानमंत्री	धर्म एवं दान विभाग का प्रधान
2. सेनापति	सैन्य विभाग का प्रधान
3. युवराज	राजा का उत्तराधिकारी
4. दौवारिक	राजकीय द्वार रक्षक
5. अंतर्वशिक	राजा की निजी अंगरक्षक सेना का प्रमुख
6. समाहर्ता	राजस्व विभाग का प्रधान
7. सन्निधाता	राजकीय कोष का अध्यक्ष
8. प्रशास्ता	राजकीय आज्ञाओं को लिपिक करने वाला
9. प्रदेष्टा	फौजदारी न्यायालयों का न्यायाधीश
10. नागरक	नगर व्यवस्था का प्रमुख
11. व्यावहारिक	दीवानी न्यायालय का मुख्य न्यायाधीश
12. नायक	सेना का संचालनकर्ता
13. कर्मान्तिक	उद्योगों एवं कारखानों का अध्यक्ष
14. दण्डपाल	सेना का सामान एकत्र करने वाला
15. दुर्गपाल	दुर्ग रक्षक
16. अंतपाल	सीमावर्ती दुर्गों का रक्षक
17. आटविक	वन विभाग का प्रमुख
18. मंत्री परिषदाध्यक्ष	मंत्री परिषद का प्रमुख

मौर्यकालीन विभागाध्यक्ष

1. अक्षपाटलाध्यक्ष	लेखा विभाग का प्रधान
2. सीताध्यक्ष	कृषि विभाग का प्रधान
3. अकराध्यक्ष	खान विभाग का प्रधान
4. लक्षणाध्यक्ष	टकसाल का अध्यक्ष
5. लवणाध्यक्ष	नमक से संबंधित विभाग
6. विविताध्यक्ष	चारागाह का अध्यक्ष
7. नवाध्यक्ष	नावों एवं जहाजों का अध्यक्ष
8. पत्तनाध्यक्ष	बंदरगाहों के विभागों का अध्यक्ष
9. पण्याध्यक्ष	वाणिज्य विभाग का अध्यक्ष
10. कूप्याध्यक्ष	वन विभाग का अध्यक्ष
11. पौतवाध्यक्ष	बाट एवं माप विभाग का अध्यक्ष
12. सूत्राध्यक्ष	कताई-बुनाई विभाग का अध्यक्ष
13. सूनाध्यक्ष	बूचड़खाने का अध्यक्ष
14. गणिकाध्यक्ष	वेश्याओं के विभाग का अध्यक्ष
15. बंधकाराध्यक्ष	जेलखाने का अध्यक्ष

मौर्य काल में प्रमुख कर व आय

सीता	राजकीय भूमि पर खेती से प्राप्त होने वाली आय
भाग	भूमि कर
प्रणय	आपात कालीन कर
बलि	धार्मिक कर
पिण्डकर	गाँव पर कर
गुल्मदेय	सैनिकों का शुल्क
उदयक भाग	सिंचाई कर
हिरण्य	नकद कर
विष्टि	वेगार
विवीत	चारागाह कर

- राज्याभिषेक के 20वें वर्ष अशोक ने बुद्ध के जन्म स्थल लुम्बिनी की यात्रा की। अशोक ने वहाँ का भूमिकर 1/6 से घटाकर 1/8 कर दिया।

मौर्य साम्राज्य का बौद्ध धर्म के साथ संबंध

- मौर्य साम्राज्य का बौद्ध धर्म के साथ अन्योनाश्रय संबंध रहा है। सम्राट अशोक ने कलिंग युद्ध के बाद अहिंसा और शांति के अनुगामी बौद्ध धर्म से प्रभावित होकर 'बुद्धम् शरणम् गच्छामि', 'धम्मं शरणम् गच्छामि', 'संघम् शरणम् गच्छामि' एवं 'जियो और जीने दो' जैसे लोक कल्याणकारी आदर्शों को अपने राजधर्म में शामिल किया।

- बौद्ध धर्म अपनाने के बाद अशोक ने बौद्ध नीतियों एवं उनके आदर्शों के प्रचार-प्रसार के लिए भारत के बाहर भी कई देशों में अपने 'धम्ममहामात्रों' को भेजा। यहां तक कि इसके प्रचार के लिए अशोक ने अपने पुत्र महेन्द्र एवं पुत्री संघमित्रा को भी लगाया।
- सारनाथ में संरक्षित 'सारनाथ सिंह स्तंभ' में चतुर्सिंह के नीचे भगवान बुद्ध के जीवन में संबंधित चार पशुओं-हाथी, घोड़ा, बैल तथा सिंह/शेर की आकृतियां उत्कीर्ण हैं। इनमें हाथी बुद्ध के गर्भस्थ (गर्भ में) होने का, बैल उनके जन्म का, अश्व उनके गृहत्याग का तथा सिंह सार्वभौमसत्ता का प्रतीक है। इसे सम्राट अशोक ने भगवान बुद्ध द्वारा 'धम्मचक्रप्रवर्तन' यानी प्रथम उपदेश देने की ऐतिहासिक घटना की स्मृति में बनवाया था।
- कई बौद्ध स्थापत्यों में सांची, भरहुत, सारनाथ जैसे प्रमुख स्तूपों के अलावा अनेक बौद्ध विहारों का निर्माण मौर्य राजाओं द्वारा किया गया था।
- बौद्ध भिक्षुओं के वर्षावास अथवा विश्राम स्थल (विहार) के रूप में बराबर एवं नागार्जुनी पहाड़ियों में कई रॉक कट गुफाओं का भी निर्माण किया गया था।

मौर्य प्रशासन के घटक/इकाई

↓
केंद्र → राजा
↓
प्रांत → कुमार/युवराज
↓
मंडल → प्रदेष्टा/प्रादेशिक
↓
आहार/विषय → विषयपति
↓
स्थानीय → 800 ग्रामों का समूह
↓
द्रोणमुख → 400 ग्रामों का समूह
↓
खार्वटिक → 200 ग्रामों का समूह
↓
संग्रहण → 100 ग्रामों का समूह
↓
ग्राम → ग्रामणी

शुंग वंश

- मौर्य वंश का अंतिम शासक बृहद्रथ था। 185 ई.पू में सेनापति पुष्यमित्र शुंग ने बृहद्रथ की हत्या कर शुंग वंश की स्थापना की।
- धनदेव के अयोध्या अभिलेख के अनुसार पुष्यमित्र शुंग ने दो अश्वमेध यज्ञ किया।
- पाटलिपुत्र और वैशाली, पुष्यमित्र शुंग के शासनकाल में दो राजधानियाँ थी।

कण्व वंश

- 73 ई.पू. में शुंग वंश के अंतिम शासक देवभूति की हत्या उसके मंत्री वासुदेव ने करके कण्व वंश की स्थापना की।
- इस वंश का अंतिम शासक सुशर्मा था।
- सुशर्मा की हत्या सातवाहन वंश के शासक सिमुक द्वारा कर दी गई थी।

गुप्त काल

- संभवतः आधुनिक उत्तर प्रदेश के पूर्वी भाग में इलाहाबाद और बनारस के मध्यवर्ती क्षेत्र में गुप्त शासकों का उदय हुआ। गुप्त इस क्षेत्र में कुषाणों के अधीनस्थ सामंत थे।
- गुप्त शासकों ने लगभग 275-550 ई. तक शासन किया।

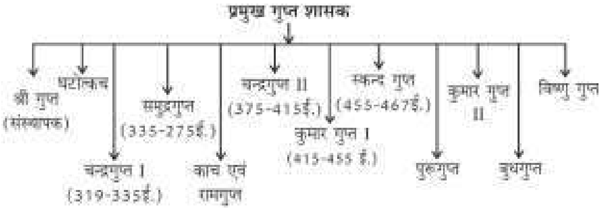

- गुप्त वंश का संस्थापक श्रीगुप्त था। श्रीगुप्त का उत्तराधिकारी घटोत्कच था।
- चंद्रगुप्त प्रथम (319-335 ई.) गुप्तवंश का प्रथम स्वतंत्र शासक था। इसने लिच्छवी राजकुमारी कुमारदेवी से विवाह किया।
- 320 ई. में पाटलिपुत्र में चन्द्रगुप्त प्रथम ने महाराधिराज की उपाधि धारण की।
- गुप्त संवत् (319-320 ई.) की शुरुआत चंद्रगुप्त प्रथम ने किया था।

समुद्रगुप्त

- चंद्रगुप्त प्रथम की मृत्यु के बाद उसका पुत्र समुद्रगुप्त गुप्त साम्राज्य के सिंहासन पर बैठा।
- हरिषेण समुद्रगुप्त का दरबारी कवि था जिसने 'प्रयाग प्रशस्ति' की रचना किया। समुद्रगुप्त ने इसे कौशाम्बी के अशोक स्तम्भ पर उत्कीर्ण करवाया।
- नालन्दा व गया ताम्रपत्रों के अनुसार, समुद्रगुप्त प्रथम गुप्त शासक था जिसने परमभागवत की उपाधि धारण की।
- प्रयाग प्रशस्ति संस्कृत भाषा में है, जिसमें समुद्रगुप्त की विजयों का उल्लेख है।
- सर्वप्रथम समुद्रगुप्त ने गंगा-यमुना दोआब क्षेत्र के शासकों को पराजित कर अपने साम्राज्य में मिला लिया। उसके बाद पंजाब, असम, नेपाल और बंगाल में अपनी सत्ता स्थापित की। फिर विंध्य पर्वतमाला क्षेत्र में स्थित आटविक राज्यों को पराजित किया।
- समुद्रगुप्त ने दक्षिणापथ के लगभग 12 राज्यों को पराजित कर उन पर संप्रभुता स्थापित की।
- दत्ता देवी, समुद्र गुप्त की पत्नी थी।
- समुद्रगुप्त को 'भारत का नेपोलियन' भी कहा जाता है।

चन्द्रगुप्त द्वितीय

- चन्द्र गुप्त की दो रानियाँ- कुबेरनागा और ध्रुवदेवी थी। कुबेरनागा से उत्पन्न पुत्री प्रभावती गुप्त का विवाह वाकाटक राजकुमार रूद्रसेन द्वितीय से हुआ था।
- मेरौली लौह स्तम्भ का सम्बन्ध चन्द्रगुप्त II से है।
- रजत सिक्का जारी करने वाला प्रथम गुप्त शासक चन्द्रगुप्त II था।
- चन्द्रगुप्त द्वितीय के दरबार के नौरत्नों में (1) कालिदास (कवि व लेखक) (2) धनवन्तरि (चिकित्सक) (3) शंकु (वास्तुकार) (4) वाराहमिहिर (खगोलविज्ञानी एवं ज्योतिषी) (5) घटकर्पर (कूटनीतिज्ञ) (6) बेतालभट्ट (जादूगर) (7) अमर सिंह (कोशकार) (8) क्षपणक (फलित ज्योतिषी) तथा (9) वररूचि (वैयाकरण) शामिल थे।

- चंद्रगुप्त द्वितीय 'विक्रमादित्य' रामगुप्त की हत्या कर गुप्त सिंहासन पर बैठा था।
- चंद्रगुप्त द्वितीय के शासनकाल में चीनी बौद्ध यात्री फाह्यान भारत आया था।

कुमारगुप्त

- चंद्रगुप्त द्वितीय के बाद उसका पुत्र कुमारगुप्त शासक बना। इसने नालंदा महाविहार की स्थापना किया।
- अनन्त देवी कुमार गुप्त की रानी थी।
- कुमार गुप्त के समय के सर्वाधिक गुप्तकालीन अभिलेख प्राप्त हुए हैं।
- महेन्द्रादित्य, श्री महेन्द्र, महेन्द्र सिंह, अश्वमेध महेन्द्र आदि उपाधियाँ कुमार गुप्त की मुद्राओं पर प्राप्त होती है।
- बांग्लादेश के तीन स्थानों- धनदैह, दामोदरपुर और बैग्राम से कुमारगुप्त कालीन ताम्रपत्र प्राप्त होता है।
- कुमारगुप्त के बाद उसका पुत्र स्कंदगुप्त (455-467) गद्दी पर बैठा इसी के शासन काल में हूणों ने भारत पर पहली बार आक्रमण किया।
- स्कन्दगुप्त ने क्रमादिव्य का विरूद धारण किया था।
- भानुगुप्त के एरण अभिलेख (510 ई.) से सती प्रथा का पहला अभिलेखीय प्रमाण मिलता है।

गुप्तकालीन प्रशासन

- गुप्त शासन की सबसे बड़ी प्रादेशिक इकाई 'देश' थी जिसके प्रशासक को गोप्ता कहा जाता था। दूसरी प्रादेशिक इकाई भुक्ति थी जिसके शासक को भोगपति कहा जाता था।
- भुक्ति के नीचे 'विषय' होता था जिसका प्रमुख विषयपति कहलाता था।
- प्रशासन की सबसे छोटी इकाई ग्राम थी। ग्राम प्रशासन का सर्वोच्च अधिकारी ग्रामिक होता था।

प्रशासनिक इकाई	भुक्ति/भोग (प्रांत) →	विषय (जिला) →	वीथि (नगर) →	ग्राम (गांव)
	↓	↓	↓	↓
प्रमुख	उपरिक/भोगपति	विषयपति	वीथि महत्तर	ग्रामिक

- ग्राम सभा को मध्य भारत में 'पंचमंडली तथा बिहार मे ग्राम जनपद' कहा जाता था।

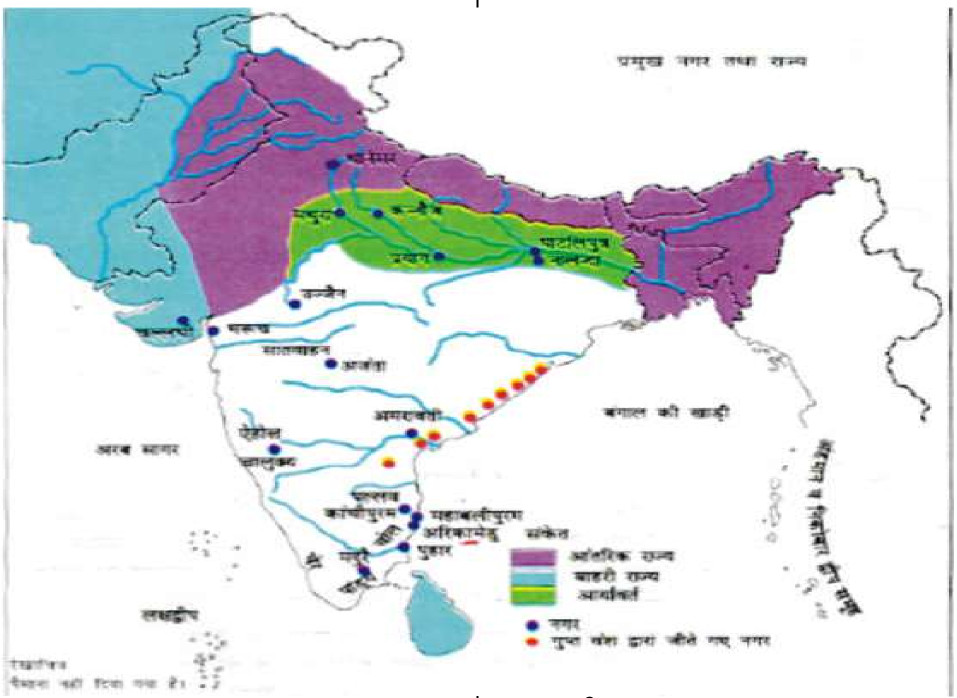

गुप्तकालीन अधिकारी एवं विभाग	
अधिकारी	**विभाग**
महादंडनायक	न्यायाधीश
संधिविग्रहिक	युद्ध व शांति का मंत्री
महाबलाधिकृत	सेनापति
दंडपाशिक	पुलिस विभाग
विनयस्थिति स्थापक	शिक्षा व धर्म संबंधी अधिकारी
महाप्रतिहार	राज प्रासाद का अधिकारी
महाक्षपटलिक	लेखा विभाग का अधिकारी
ध्रुवाधिकरण	भूमिकर संग्रह अधिकारी
शौल्किक	सीमा शुल्क का अधिकारी

गुप्तकालीन समाज

- गुप्तकालीन समाज परंपरागत चार वर्णों में विभक्त था। चारों वर्णों का आधार गुण और कर्म न होकर जन्म था।
- गुप्तकालीन सामाजिक व्यवस्था की सबसे छोटी ईकाई परिवार थी।
- फाह्यान के वर्णन के अनुसार, गुप्त काल में अस्पृश्य वर्ग था। इन्हें 'अंत्यज' तथा 'चांडाल' कहा गया है।
- नई जातियों में भूमि अनुदान के कारण कायस्थों का उदय हुआ।
- कायस्थों का सर्वप्रथम उल्लेख 'याज्ञवल्क्य स्मृति' में मिलता है।
- गुप्तकाल में 'देवदासी प्रथा' का प्रचलन था। कालिदास के ग्रंथ 'मेघदूत' में उज्जैन के महाकाल मंदिर में देवदासी रखे जाने का उल्लेख मिलता है।
- कामसूत्र एवं मुद्राराक्षस' में गणिकाओं तथा वेश्याओं का उल्लेख है।

- गुप्तकाल में दास प्रथा प्रचलित थी। मनु 7 प्रकार के तथा नारद ने 15 प्रकार के दासों का उल्लेख किया है।

गुप्तकालीन अर्थव्यवस्था

- गुप्तकालीन आर्थिक व्यवस्था का मुख्य आधार 'कृषि' था।
- निवर्तन, कुल्यावाय, द्रोणवाप तथा आढ़वाप भूमि माप का पैमाना था।
- अमरकोश में 12 प्रकार की भूमि का उल्लेख मिलता है।

भूमि के प्रकार	
क्षेत्र	खेती के लिये उपयुक्त भूमि
खिल	जो भूमि जोती नहीं जाती थी
वास्तु	वास करने योग्य भूमि
गोचर	चारा योग्य भूमि
अप्रहत	जंगली भूमि

- इस काल में नालंदा, वैशाली आदि स्थानों से श्रेणियों, सार्थवाहों आदि की मुहरें शिल्पियों की संगठनात्मक गतिविधियों को प्रदर्शित करती हैं।
- गुप्त शासकों के द्वारा सर्वाधिक स्वर्ण मुद्राएं जारी की गई जिन्हें अभिलेखों में 'दीनार' कहा गया है। चाँदी का सिक्का रूपक और ताँबे का सिक्का माषक कहलाता था।
- फाह्यान के अनुसार, सामान्य लोग मुद्रा के रूप में कौड़ियों का प्रयोग करते थे।

सुदर्शन झील

- सुदर्शन झील (गुजरात के गिरनार में स्थित) का निर्माण चन्द्रगुप्त मौर्य के समय सौराष्ट्र प्रान्त के राज्यपाल पुष्यमित्र वैश्य ने पश्चिमी भारत में सिंचाई के लिए करवाया था।
- अशोक के समय में यवन तुषाष्प ने भी इस झील पर बांध का निर्माण करवाया था।
- शक महाक्षत्रप रुद्रदामन (130-150 ई.) के समय पहली बार यह बांध टूट गया, जिसका पुनर्निर्माण उसने अपने राज्यपाल सुविशाख के निर्देशन में करवाया था।
- जूनागढ़ अभिलेख (गुजरात) से पता चलता है कि स्कन्दगुप्त के शासनकाल में भारी वर्षा के कारण सुदर्शन झील का बांध फिर टूट गया था तब इस झील का पुनरुद्धार का कार्य सौराष्ट्र प्रांत के गवर्नर पर्णदत्त का पुत्र चक्रपालित द्वारा सम्पन्न किया गया था।
- स्कन्दगुप्त ने झील के किनारे विष्णु मंदिर का निर्माण भी करवाया था।

गुप्तकालीन कला एवं साहित्य

- गुप्तकाल को कला एवं साहित्य की दृष्टि से 'स्वर्ण काल' माना जाता है।

गुप्तकालीन प्रसिद्ध मंदिर

मंदिर	स्थान
सिरपुर का लक्ष्मण मंदिर	महासमंद (छत्तीसगढ़)
भूमरा का शिव मंदिर	नागोद (मध्य प्रदेश)
तिगवा का विष्णु मंदिर	जबलपुर (मध्य प्रदेश)
देवगढ़ का दशावतार मंदिर	ललितपुर (उत्तर प्रदेश)
नचना कुठार का पार्वती मंदिर	पन्ना (मध्य प्रदेश)
भीतर गाँव का कृष्ण मंदिर	कानपुर (उत्तर प्रदेश)

- गुप्तकाल में पाटलिपुत्र, मथुरा व सारनाथ मूर्तिकला के प्रमुख केंद्र थे।
- गुप्तकाल में चित्रों के अवशेषों को बाघ, अजन्ता एवं बादामी की गुफाओं में देखा जा सकता है। अजन्ता की गुफा संख्या 16, 17 एवं 19 गुप्तकालीन है।

गुप्तकालीन प्रसिद्ध साहित्य एवं साहित्यकार

साहित्य	साहित्यकार	वर्णित विषय
अभिज्ञानशाकुन्तलम्	कालिदास	दुष्यन्त तथा शकुन्तला की प्रेम-कथा
मालविकाग्निमित्रम्	कालिदास	अग्निमित्र तथा मालविका की प्रेमकथा
विक्रमोर्वशीयम्	कालिदास	पुरूरवा एवं उर्वशी की प्रेम कथा
स्वप्नवासवदत्ता	भास	उदयन् तथा वासवदत्ता की कथा
मुद्राराक्षस	विशाखदत्त	चन्द्रगुप्त मौर्य से संबंधित कथा
देवीचन्द्रगुप्तम्	विशाखदत्त	चन्द्रगुप्त व ध्रुवस्वामिनी के विवाह का वर्णन है
मृच्छकटिकम्	शूद्रक	ब्राह्मण चारूदत्त तथा गणिका वसंतसेना की कहानी

चंद्रगुप्त द्वितीय के नवरत्न

1. धन्वन्तरि	नवरत्नों में इनका स्थान सर्वोपरि था। ये एक प्रसिद्ध वैद्य थे। इनके रचित नौ ग्रंथ पाये जाते हैं। वे सभी आयुर्वेद चिकित्सा शास्त्र से संबंधित हैं। रोगनिदान, वैद्य चिंतामणि, विद्याप्रकाश चिकित्सा, धन्वंतरि निघण्टु, वैद्यक भास्करोदय तथा चिकित्सा सार संग्रह इनकी प्रमुख रचनाएं हैं। चिकित्सा में ये बड़े सिद्धहस्त थे। इनका काम युद्ध में घायल सैनिकों की शल्य चिकित्सा करना था। ये 'सुश्रुतसंहिता' के रचयिता सुश्रुत के गुरु भी थे।
2. क्षपणक	ये एक संन्यासी थे। इन्होंने कुछ ग्रंथ लिखे जिनमें 'भिक्षाटन' ही उपलब्ध बताया जाता है।
3. अमरसिंह	ये प्रकाण्ड विद्वान थे। इनका प्रमुख ग्रन्थ 'अमरकोश' है। इसे विश्व का पहला समान्तर कोश माना जाता है। इस कोश में करीब दस हजार नाम हैं।
4. शंकु	इनका पूरा नाम 'शंकुक'/शङ्कुक है। इनका एक ही काव्य-ग्रन्थ 'भुवनाभ्युदयम्' बहुत प्रसिद्ध रहा है। इनको संस्कृत का प्रकाण्ड विद्वान माना जाता है।
5. वेतालभट्ट	विक्रम और वेताल की कहानी जगतप्रसिद्ध है। ये 'वेताल पंचविंशति' के रचयिता थे। 'वेताल-पच्चीसी' से ही यह सिद्ध होता है कि राजा विक्रमादित्य के वर्चस्व से वेतालभट्ट कितने प्रभावित थे। इन्होंने विक्रम-वेताल के माध्यम से विक्रमादित्य के साहस और पराक्रम को कथाओं में पिरोया है।